ISSN: 2583-7869

Volume-01, Issue-09 November 2023

द पहाड़ी एग्रीकल्चर

पर्वतीय कृषि की मासिक ई-पत्रिका

तकनीकी ज्ञान आधारित
विकास की राह

पर्वतीय कृषि संबन्धित जागरुकता का एक प्रयास

www.pahadiagromagazine.in

निदेशक शैक्षणिक
वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली उत्तराखण्ड औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय
रानीचौरी, टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) –249199

फोन नं. - 01376-252138, फैक्स 01376-252128
Email: directoracademicsuuhf@gmail.com

डा0 अरबिंद बिजल्वाण
निदेशक शैक्षणिक

पत्रांक : यू0यू0एच0एफ0 / वा0म0 / 2560

दिनांक : 17.10.2023

|| शुभकामना संदेश ||

मुझे यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** द्वारा अपनी मासिक ई-पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है।

आपके द्वारा प्रकाशित की जाने वाली मासिक ई-पत्रिका **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** किसानों को नयी-नयी जानकरीयाँ एवं पर्वतीय क्षेत्रों के युवाओं को स्वरोजगार प्रदान करने हेतु बढ़ावा देगी।**"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"**सभी किसानों, गैर सरकारी संस्थाओं, केंद्र एवं राज्य सरकार की किसान कल्याणकारी योजनाओं, पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि से संबन्धित स्टार्टअप्स आदि के लिए एक माध्यम का कार्य कर रहा है। मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि इस ई-पत्रिका के माध्यम से केंद्र एवं राज्य सरकार की किसान कल्याणकारी योजनाओं को जनमानस तक पहुँचने में मदद मिलेगी।

मैं **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"**की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

17/10/2023
निदेशक शैक्षणिक

श्री हेमेन्द्र नेगी
संस्थापक / एडिटर
"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"

VOLUME 01 – ISSUE 09

ISSN: 2583-7869

https://pahadiagromagazine.in

THE PAHADI AGRICULTURE : e-Magazine

- *The Mountain Agriculture Magazine*

- Release of 9th issue : **30th November 2023**
- Website : **https://pahadiagromagazine.in**

Annual Membership Form: https://ee.kobotoolbox.org/x/yvjl766S

Editorial Team: https://pahadiagromagazine.in/editorial-team/

https://pahadiagromagazine.in

Table of Contents

मृदा परीक्षण – महत्व एवं नमूना लेने की विधि तथा सेब के पौधों के लिए पौषक तत्व 1

मीरा देवी, जीतेन्द्र के चौहान, अनुराग शर्मा, आरती शुक्ला, गरिमा और योरमिला कुमारी 1

डॉ॰ वाई. एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन 1

अदरक बीज का कैसे करें भंडारण.. 5

डा० राजेन्द्र कुकसाल, कृषि एवं उद्यान विशेषज्ञ... 5

सुपर फूड चिया बीज की खेती से किसानों को बना रहे हैं आत्मनिर्भर.. 7

Success stories on paddy and vegetables 11

Dr. Anshuman Singh, Scientist, KVK Bharsar, Pauri Garhwal (Uttarakhand) 11

VCSG Uttarakhand University of Horticulture and Forestry, Bharsar 11

बहुउद्देशीय फसल चक्र पर आधारित खेती.. 14

महावीर सिंह राणा, गाँव बजीरा, ब्लॉक जखोली, जिला रुद्रप्रयाग 14

परम्परागत फसलों के साथ स्ट्रॉबेरी एवं मशरूम की खेती.. 18

अनुज राणा, गाँव बड़कोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी 18

मुर्गी पालन : पहाड़ी क्षेत्रों में आमदनी का एक बहतरीन ज़रिया.. 22

जोगा सिंह सामंत, गांव सिंधागाट, ब्लॉक बाराकोट, जिला चंपावत, उत्तराखण्ड 22

राज्य निर्माण आन्दोलन से खेती किसानी तक का सफर 25

पूर्व सैनिक/ उतराखण्ड़ आंदोलनकारी हयात सिंह राणा 25

जखोली-कपणिया, ब्लॉक जखोली, जिला रुद्रप्रयाग.. 25

जैविक सब्जी, मशरूम उत्पादन एवं पहाड़ी उत्पादों से आत्मनिर्भरता की राह... 29

अनीता प्रकाश, गाँव अलचोना, ब्लॉक भीमताल, जिला नैनीताल 29

काले गेहूँ, सब्जी उत्पादन एवं सगंध पौधों की खेती.. 33

जय सिंह बिष्ट, गांव कामदा, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी.. 33

विरासत की कर रहे हैं हिफाजत.. 37

वैद्य रामकृष्ण पोखरियाल, ग्राम - पोखरी, पोस्ट- विसल्ड,.. 37

ब्लॉक पाबौ, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, 246164 37
औषधीय पौधों को उगाकर बना रहे हैं एक अलग पहचान 42
संजय मेहरा, गाँव भंगोटा, ब्लॉक नारायणबगड़, जिला चमोली........ 42
पशुपालन आधारित आजीविका से स्मृद्धि की राह पर........ 46
देवेंद्र सिंह नयाल, गांव नाई, ब्लॉक ताकुला, जिला अल्मोड़ा........ 46

THE PAHADI AGRICULTURE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10156

मृदा परीक्षण – महत्व एवं नमूना लेने की विधि तथा सेब के पौधों के लिए पौषक तत्व

मीरा देवी, जीतेन्द्र के चौहान, अनुराग शर्मा, आरती शुक्ला, गरिमा और योरमिला कुमारी

डॉ॰ वाई. एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन

पौधे के लिए आवश्यक पोषक तत्व

- गैर खनिज पोषक तत्व – कार्बन, हाईड्रोजन और ऑक्सीजन।
- प्रधान खनिज पोषक तत्व (Primary) – नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश।
- गौण खनिज पोषक तत्व (Secondary) – कैल्शियम, मैगनीशियम, सल्फर।
- सूक्ष्म पोषक तत्व (Micro nutrients) – लोहा, जिंक, बोरोन, कॉपर, मैगनीज, मोलीबडेनम, क्लोरीन तथा निक्कल।

मृदा परीक्षण –आवश्यकता

- मिट्टी की भौतिक एवं रासायनिक संरचना में विषमताएं
- लगातार एक ही जगह फसल उगाने से मिट्टी में तत्वों की कमी हो जाना जिस के लिए उचित मात्रा में खाद या उर्वरक डालने की आवश्यकता ताकि मिट्टी में आवश्यक पोषक तत्वों का संतुलन बना रहे।
- अन्धाधुंध खादों के प्रयोग से मिट्टी में पोषक तत्वों का असंतुलन जिससे मिट्टी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, एवं बहुमूल्य खादें नष्ट होने के साथ–2 पर्यावरण को भी नुक्सान पहुँचता है। इसलिए उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर होना जरूरी है।
- मृदा परीक्षण मिट्टी के रासायनिक, भौतिक तथा जैविक गुणो का निरीक्षण और उसकी उपजाऊ शक्ति का वैज्ञानिक ढंग से मूल्यांकन करना।
- मिट्टी में विभिन्न पोषक तत्वों की मात्रा का सही मूल्यांकन कर फसल में आवश्यकता अनुसार संतुलित मात्रा में खाद डाल सकते हैं।
- मिट्टी में अम्लीयता/क्षारीयता (pH) एवं विधुत चालकता (EC) का पता लगाकर भूमि सुधारक रासायनों जैसे कि चूना या जिप्सम की अनिवार्यता एवं सही मात्रा का निर्धारण किया जा सकता है। ये कारक परोक्ष रूप से पैदावार पर असर डालते हैं। खादों के संतुलित प्रयोग से सभी पोषक तत्वों की उपयोग क्षमता बढ़ती है, फसलों की उपज तथा गुणवता बढ़ती है, मिट्टी का स्वास्थ्य ठीक बना रहता है व धन की बचत होती है।

मृदा परीक्षण का समय

- नमूना खाली खेत से फसल की कटाई के बाद लें। यदि खड़ी फसल से नमूना लेना पड़े तो कतारों के बीच से लें । मिट्टी का

नमूना इस प्रकार लिया जाना चाहिए ताकि यह पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करता हो और इसकी जांच की सिफारिशें पूरे खेत के लिए लागू हों।

- प्रत्येक खेत की मिट्टी का अलग–2 नमूना लें। कम से कम तीन वर्ष में एक बार जांच अवश्य करायें।
- मिट्टी का नमूना बिजाई से कम से कम एक माह पहले लेकर निकटतम मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में परीक्षण के लिए भेजे ताकि बुआई से पहले परीक्षण की रिपोर्ट मालूम हो।

मिट्टी का नमूना लेने की विधि

कम अवधि वाली फसलों के लिए:

लम्बी अवधि वाली फसलों/फलदार पौधों के लिए:

खेत को मिट्टी के रंग, बनावट, ढलान, उत्पादकता के आधार पर बांटें

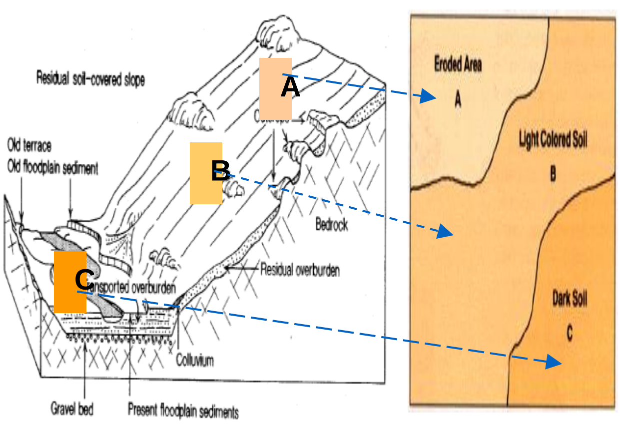

खेत के एक समान भाग जिसका नमूना लेना हो उसके 15–20 स्थानों पर निशान लगाऐं

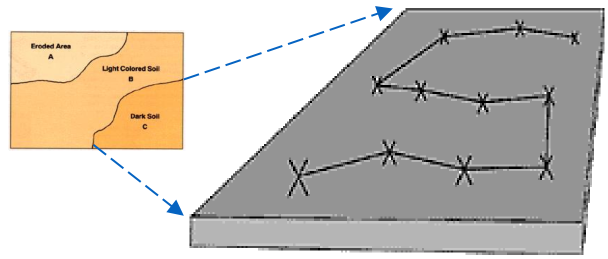

- मिट्टी का ढेर लगाऐं ।
- चार बराबर हिस्सों में बांटे।
- आमने सामने के दो हिस्से चुनें तथा दो
- हिस्से छोड़ें।
- फिर इन दो हिस्सों को मिलाएं।
- दुबारा चार हिस्सों में बांटे।
- दो हिस्से चुनें तथा दो हिस्से छोड़ें
- यह प्रक्रिया जारी रखें जब तक आधा किलोग्राम प्रतिनिधित्व नमूना न मिल जाए।
- नमूने को सूती थैली में भरे तथा लैबल लगायें जिसमें किसान का नाम, खेत का नाम, उगाई जाने वाली फसल, गांव, ब्लाक इत्यादि का विवरण हो। इस लेबल की एक प्रति अपने पास रखें।

मृदा नमूना लेते हुए

लम्बी अवधि वाली फसलों/फलदार पौधों के लिएः

- बगीचे के एक समान भाग जिसका नमूना लेना हो, 10–15 प्रतिनिधि पौधों को चिन्हित करें।
- चिन्हित पौधों के तौलियों के बीच, पौधे के तने से 1 – 2 फुट दूर आगर द्वारा 0–15 और 15–30 सै.मी. अलग–2 गहराई तक चारों दिशाओं से नमूने लें।
- 0–15 सै.मी. गहराई की मिट्टी को पहले बताई विधि द्वारा मिलाकर एक नमूना तैयार करें।
- ऐसे ही 15–30 सै.मी. गहराई की मिट्टी का दूसरा नमूना तैयार करें। शेष विधि पहले जैसी ही रहेगी।

सावधानियां

- मिट्टी का नमूना ऐसे स्थान से न ले जहांः खाद का ढेर, मेढ़, सिंचाई की नाली या भूमि सुधारक रसायन रखा हो।
- खेत के पास उगे किसी पेड़ की जड़ों वाले स्थान से।
- रसायनिक या गली सड़ी खाद कुछ दिन पहले डाली हो।
- झाड़ियों को जलाया हो।
- गीली मिट्टी का नमूना न लें यदि लेना पड़े तो छाया में सूखा लें।
- नमूना सूखा साफ सूती थैली या पोलीथीन के लिफाफे में डालें। इसे खाद के बोरों व रसायनों से दूर रखे।
- सूक्ष्म तत्वों के परीक्षण हेतु नमूना लेते समय लोहे की बाल्टी और औजार प्रयोग न लाएं। ऐसे में स्टील आगर व प्लास्टिक बाल्टी प्रयोग करें।
- नमूना लेते समय हाथ साफ सुथरे हों।

नमूना कहां भेजें?

- नौणी (सोलन) स्थित डा. यशवन्त सिह परमार उधौनिकी एवं वानिकी विश्वविधालय के **मृदा एवं जल प्रबंधन विभाग** में किसानों को बहुत कम दाम पर विस्तृत मृदा परीक्षण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।
- विश्वविधालय के कृषि विज्ञान केन्द्र **कण्डाघाट** (सोलन), **रोहड़ू** (शिमला), **रिकांगपिओ** (किन्नौर) व **चम्बा** में भी यह सुविधा है।
- कृषि विभाग द्वारा भी लगभग प्रत्येक जिले में मुफ्त मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं।

सेब के पौधों के लिए पोषक तत्व

सेब के पौधों की प्रयाप्त वृद्वि, उत्पादन क्षमता और फलों के आकार में आवश्यक पोषक तत्वों का संतुलित मात्रा में प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। जो तत्व पौधों के लिए अधिक मात्रा में आवश्यक है वे मुख्य पोषक तत्व कहलाते हैं। जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाशियम। कम मात्रा में उपयोग होने वाले तत्व सूक्ष्म तत्व कहलाते हैं, जैसे जस्ता, सुहागा (बोरोन) मैगनीज, तांबा और लोहा इत्यादि। पोषक तत्वों की कमी या अधिकता के परिणाम स्वरुप फल फटे हुए तथा आकार में छोटे या टेढ़े–मेढ़े बनते हैं तथा पौधों में अन्य प्रकार के विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं। पौधों की उत्पादन

क्षमता भी कम हो जाती है। पोषक तत्वों की कमी को उर्वरकों के रुप में डाल कर पूरा किया जा सकता है। उर्वरकों की अधिक या कम मात्रा, पत्ती विश्लेषण तथा भूमि की जांच के आधार पर निर्धारित की जाती है।

नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश तत्वों की मात्रा को खादों द्वारा आसानी से पूरा किया जा सकता है। 10 वर्ष या इससे अधिक उम्र के पौधों को कैल्शियम नाइट्रेट 1500 ग्राम + यूरिया 1000 ग्राम, सुपर फॉस्फेट 2000 ग्राम व म्यूरेट ऑफ पोटाश 1170 ग्राम (दिसम्बर–जनवरी) में देना चाहिए।

1500 ग्राम कैल्सियम नाइट्रेट + 1000 ग्राम यूरिया को तीन बराबर भागों में बाँट कर एक भाग फूल खिलने के 15–20 दिन पहले दूसरा भाग पूरे फूल खिलने पर व तीसरा भाग फूल खिलने के 15–20 दिन बाद करनी चाहिए। जस्ता, सुहागा व मैगनीज तत्वों को 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट, 0.1 प्रतिशत बोरिक एसिड तथा 0.4 प्रतिशत मैगनीज सल्फेट के छिड़काव से पूरा किया जा सकता है (जिंक सल्फेट, मैगनीज सल्फेट के साथ आधी मात्रा में अनबुझा चूना अवश्य मिलाएं)। पौधों की आयु के अनुसार खाद देने के लिए निम्नलिखित सिफारिश की जाती है।

आयु के अनुसार पौधों में खुराक तत्वों की मात्रा

पौधों की आयु वर्ष	नाइट्रोजन (ग्राम प्रति पौधा)	फास्फोरस (ग्राम प्रति पौधा)	पोटाश (ग्राम प्रति पौधा)	कैल्शियम नाइट्रेट (ग्राम प्रति पौधा)	यूरिया (ग्राम प्रति पौधा)	सुपर फास्फेट (ग्राम प्रति पौधा)	म्युरेट ऑफ पोटाश (ग्राम प्रति पौधा)
1	70	35	70	150	100	220	115
2	140	70	140	300	200	440	235
3	210	105	210	450	300	660	350
4	280	140	280	600	400	880	470
5	350	175	350	750	500	1100	585
6	420	210	420	900	600	1320	700
7	490	245	490	1050	700	1540	820
8	560	280	560	1200	800	1760	935
9	630	315	630	1350	900	1980	1050
10 वर्ष या अधिक	700	350	700	1500	1000	2000	1170

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10157

अदरक बीज का कैसे करें भंडारण

डा० राजेन्द्र कुकसाल, कृषि एवं उद्यान विशेषज्ञ

समय पर प्रमाणित/ ट्रुथफुल अदरक का बीज न मिल पाने के कारण उत्तराखंड में कृषक अदरक की लाभकारी खेती नहीं कर पा रहे हैं।

योजनाओं में अदरक बीज खरीद हेतु राजकीय पौधालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों / राज्य कृषि / औद्यानिक विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं अदरक बीज उत्पादक सार्वजनिक संस्थाओं से क्रय करने के स्पष्ट निर्देश है। उद्यान विभाग वर्षों से टेंडर द्वारा निजि फर्मों / दलालों के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों असम, मणिपुर, मेघालय व अन्य राज्यों से सामान्य किस्म के अदरक को क्रय कर प्रमाणित / Truthful रियोडी जिनेरियो किस्म बता कर राज्य के कृषकों को योजनाओं में बीज के नाम पर बांटता आ रहा है। हिमाचल प्रदेश की तरह कभी भी राज्य को अदरक बीज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास नहीं किया गया।

अदरक उत्पादकों का कहना है कि उद्यान विभाग से प्राप्त अदरक बीज समय पर नहीं मिल पाता साथ ही इस बीज से कई तरह की बीमारियों खेतों में आने का डर रहता है।

प्रगतिशील अदरक उत्पादक स्वयमं अपनी अदरक उपज से अदरक को बीज हेतु भंडारित करते हैं। इसलिए आवश्यक है कि अदरक की भरपूर उपज हेतु ,कृषक अपनी स्वस्थ उपज से ही अदरक बीज का भंडारण करें।

अदरक की भरपूर उपज के लिए, स्वयंम की उत्पादित अदरक का करें बीज हेतु भंडारण

अदरक बीज का भंडारण -

बीज हेतु अदरक उपज को लम्बे समय याने तीन माह से अधिक समय (दिसंबर- मार्च) तक भंडारण करना होता है , इसलिए आवश्यक है भंडारण सही विधि से करें जिससे अदरक सड़े नहीं।

जिस खेत में अदरक की फसल पर बीमारियों लगी हों, उस खेत के अदरक को बीज के लिए भंडारण न करें।

अच्छे सुडौल, पूर्ण रूप से विकसित प्रकंदों का चयन करके उन्हें अलग से रखें तथा अच्छी तरह से छाया में सुखा लें।

प्रकन्दों का भंडारण ठंडे,सूखे ऊंचे एवं छाया दार स्थान पर एक उचित वायु संचार युक्त गड्ढों में करना चाहिए।

भंडारण करने से पूर्व गड्ढे को एक भाग फौरमिलीन तथा 8 भाग पानी का घोल बनाकर उपचारित कर दें ,गड्ढे के अन्दर घास फूस जलाकर भी गड्ढे को उपचारित किया जा सकता है।

उपचारित गड्ठे को भलीभांति सफाई कर लें तथा उसे अंदर से गाय के गोबर + गोमूत्र से भलीभांति पुताई कर

एक सप्ताह तक धूप में खुला छोड़ दें जिससे गड्ढे में नमी न रहे।

भंडारण करने से पूर्व प्रकन्दों को कार्बेन्डाजिम (100 ग्राम) + मैन्कोजैव (250 ग्राम) को 100 लीटर पानी में घोल तैयार कर लें इस घोल में 70 - 80 किलोग्राम अदरक को एक घंटे तक उपचारित करें। घोल का प्रयोग दो बार किया जा सकता है।

ट्राइकोडर्मा कल्चर से भी अदरक बीज का उपचार कर सकते हैं उपचार छाया में करें तेज धूप में ट्राइकोडर्मा जीवाणु मर सकते हैं। अदरक पर हल्का सा पानी छिड़क कर, दस ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो अदरक बीज की दर से (याने एक कुन्तल बीज हेतु एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा) उपचारित करें, जिससे ट्राइकोड्रमा की पर्त अदरक कन्दो पर बन जाय। उपचारित अदरक को छाया में भली भांति सुखायें।

बीज भंडारण से पूर्व गड्ढे में सबसे नीचे एक परत रेत या बुरादा या धान की पुलाव बिछा दें फिर उपचारित बीज को भरें। हवा के संचार के लिये छिद्र युक्त प्लास्टिक के पाईप को गड्ढे के बीच में डालें। गड्ढे में प्रकन्दों को पूरी तरह से न भरें 1/4 भाग खाली रखें। ऊपर के खाली भाग में सूखी घास रखें तथा गड्ढे को ऊपर से लकड़ी के तख्ते से ढक दें। तख्तों के किनारों को मिट्टी से पोत दें। हवा के आवा गमन हेतु यदि छिद्र युक्त पौलीथीन पाइप की व्यवस्था नहीं हो पा रही है तो ऊपर से बिछे तखत्तो के बीच में हवा के आव गमन हेतु जगह छोड़ दें।

सही भंडारण के लिए खत्तियों को अच्छी तरह ढकना जरूरी है इसके लिए पत्तियों व घास का रिंगांल / बांस के साथ कच्चा ढांचा बनाया जा सकता है जिससे बर्षा का पानी खत्तियों में जाने से रोका जा सके।

समय समय पर भंडारित अदरक को पलट कर देखते रहें यदि सड़ा अदरक दिखाई दे तो उसे हटा लें।

टिहरी जनपद के आगरा खाल में अदरक उत्पादक खत्तियो में बीज हेतु अदरक भरने के बाद ऊपर से मालू के पत्तों से बने बिशेष आवरण जिसे स्थानीय भाषा में पितलोट कहते हैं, से ढक देते हैं जिससे बर्षा का पानी अन्दर नहीं जा पाता साथ ही हवा का आवा गमन भी बना रहता है जिससे अदरक बीज सुरक्षित रहता है।

आगराखाल क्षेत्र में किसान पारंपरिक विधि से अदरक बीज का भंडारण करते हुए

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10158

सुपर फूड चिया बीज की खेती से किसानों को बना रहे हैं आत्मनिर्भर

अनंत सिंह खेरोला, गांव कांडा, रेखापट्टी, जिला टिहरी गढ़वाल

भारत के किसान पारम्परिक फसलों की खेती करने के साथ-साथ अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की मुनाफे वाले फसलों की खेती भी कर रहे हैं। सरकार भी व्यापारिक फसलों की खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित करती रहती है। इसी कड़ी में आज हम ऐसी ही एक व्यापारिक फसल चिया (*Salvia hispanica* L.) की खेती की बात करेंगे। किसान चिया सीड्स की खेती करके अच्छा लाभ व मुनाफा कमा सकते हैं। चिया सीड्स एक प्रकार का सुपर फूड है। भारत में सुपर फूड्स (Super Foods) की मांग और खपत में लगातार वृद्धि हो रही है, साथ ही विदेशी बाजारों में भी चिया सीड्स की मांग भी बढ़ रही हैं। शुरुआत में चिया सीड्स की खेती सिर्फ अमेरिका में की जाती थी, लेकिन सेहत और खेती के नजरिये से इसके लाभ को समझते हुए अब भारत के कई क्षेत्रों में चिया सीड्स की खेती (Chia Seeds Farming) सफलतापूर्वक की जा रही है।

अनंत जी बताते हैं कि मैंने इंजीनियरिंग की हुई है फिर 2 साल जॉब की, 2017 से हमने चिया सीड फार्मिंग को शुरू किया और उत्तराखंड में पहली बार चिया सीड फार्मिंग करने वाले पहले किसान हम ही हैं। और 3 साल तक हमने इसके बीज को तैयार किया, खुद खेती करके और जब 3 साल बाद हमारा बीज तैयार हो गया तो हमने 2020-21 से किसानों को देना शुरू किया और लगभग 200 किसान हमारे साथ जुड़े हुए हैं जो टिहरी जिले के 6 गांव से जुड़े हुए हैं, जहाँ हम चिया की खेती कर रहे हैं जो कि आगराखाल में तीन गांव हैं और चम्बा के पास भी तीन गांव हैं, और सभी किसानों से खरीद कर हम स्वयं बाजार में बेचते हैं।

इसकी मार्केटिंग हम ऋषिकेश, देहरादून और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म अमेजॉन के माध्यम से भी सेल करते हैं और हम

इसकी धीरे-धीरे प्रोडक्शन बढ़ाते गए हैं और भी गाँव हमसे जुड़ रहे हैं और भी किसान हम लोगों से जुड़ रहे हैं और इसकी खासियत यह है कि इसे कोई भी जानवर नहीं खाता है और पानी की भी जरूरत नहीं होती है क्योंकि यह बरसात की फसल है और यह हाई वैल्यू क्रॉप है इसको हम किसानों से लगभग 12000 से 15000 क्विंटल के हिसाब से खरीदते हैं, और यह हम उनके घर से ही उठाते हैं और हम किसानों को बीज और खाद फ्री में देते हैं और शुरुआत में हमने चिया के बीज साउथ इंडिया से मंगवाया था वहाँ ज्यादातर इसकी पैदावार होती है।

उस समय जो बीज था उसे हम पहली बार अपने क्षेत्र में उगा रहे थे तो इसकी पैदावार बहुत कम थी, हम बीज को बार-बार प्रयोग में लेते रहे जिससे वह यहाँ के वातावरण के हिसाब से ढ़ल गया और अच्छी पैदावार होने लगी और बीज को हम किसानों को देते हैं और फिर वह उगाते हैं फिर उसी को अपने पास रखते हैं जैसे पहले साल फ्री में देते हैं अगले साल जो उनकी पैदावार होती है उसे अगले साल के लिए अपने लिए बीज रख लेते हैं और बाकी बेच देते हैं।

आगे अनंत जी कहते हैं की शुरुआत में हमने चिया फार्मिंग पांच नाली से शुरू की थी फिर हम इसमें 3 साल तक रिसर्च करते रहे और इन्हीं 3 सालों में हमने एक हेक्टर तक इसकी खेती की और प्रति हेक्टेयर में इसकी जो ऊपज थी 600 से 700 किग्रा थी और इसके बाद हमने किसानों को देना शुरू किया था क्योंकि पहले हमने इस चीज को खुद सीखा कैसे इसे उगा सकते हैं उसके लिए मार्केट बनाया जिससे हम उसे खरीद भी सके और बेच भी सकें, और अभी हम जितना खरीद सकते हैं उतना किसानों से उगाव भी रहे हैं और यह फसल जून के लास्ट में लगती है और यह दिसंबर माह में इसकी कटाई हो जाती है और 6 गांव जो जुड़े हुए हैं वह है सरसाड, देवली, बेसरंग, कोटद्वार, चौपड़ियाल गांव यह गांव हमसे जुड़े हुए हैं। और इसकी मार्केटिंग हम मॉडर्न स्टोर में करते हैं और वहाँ यह पहले से ही बिकता है और वहाँ पर हम अपना उत्पाद सुपर फार्मर्स ब्रांड के नाम से बेचते हैं |

ऋषिकेश, देहरादून में जो स्टोर है उनमें हम चिया के बीज को सेल करते हैं और चिया डायरेक्ट ही प्रयोग होता है इसको साफ करके पानी में भीगा कर खा सकते हैं और बाकी हम इसके अलावा भी अन्य बीज बेच रहे हैं जैसे अलसी का बीज, कद्दू के बीज, एवं सूरजमुखी | वर्तमान समय में हम पांच प्रोडक्ट को सेल कर रहे हैं जो की 100 ग्राम और 150 ग्राम में होते हैं।

अलसी बीज उत्पादन हमने पिछले वर्ष से शुरू किया है और बाकी सनफ्लावर, कद्दू, ट्रायल मिक्स हमने अभी कुछ समय से ही शुरू किया है।

आगे अनंत जी कहते हैं कि इन सब से हमारा जो सालाना टर्नओवर है लगभग 7 से 8 लाख तक हो जाता है, और इसके अलावा हम बल्क में भी और चीज सेल करते हैं जैसे झंगोरा, मंडवा और यह सब ऑर्डर आने पर ही हम लोग सेल करते हैं और अगर ऑर्डर अच्छा हुआ तो बहुत बड़े पैमाने पर हम इसे सेल करते हैं और इससे भी डिमांड अच्छी रही तो बल्क से भी हमारा सालाना 8 से 10 लाख का टर्नओवर हो जाता है और 2021 से हमें साउथ इंडिया में कुछ क्रेता मिले हैं जहाँ **हम इन्हें डायरेक्ट सेल करते हैं**

आगे अनंत जी बताते हैं कि मैं किसानों को इस चीज से ज्यादा से ज्यादा जोड़ना चाहता हूँ और चिया के बहुत से आर्डर है मेरे पास 200 टन तक लोग खरीदना चाहते हैं पर मैं उगा नहीं पा रहा हूँ मेरे पास इतना लाइन ऑफ क्रेडिट नहीं है अगर सरकार से मुझे लाइन ऑफ क्रेडिट मिले जैसे मैं उगाऊ 2 महीने के लिए मुझे पैसा मिले खरीदने के लिए बाद में बेच के वापस भी कर दूं इससे उत्तराखंड के किसानों की काफी मदद हो सकती है, और अभी मैं ट्राई कर रहा हूँ कि ऐसी कुछ स्कीम बनाएं और प्रोडक्शन भी हम तभी बढ़ा सकते हैं जब हमारे पास भी पैसा होगा।

चिया के सीड हमने प्रथम वर्ष 400 से ₹500 प्रति किग्रा बेंगलुरु से खरीदे थे और किसानों को हम अभी भी फ्री में दे रहे हैं, 3 साल हमने जो रिसर्च की उस समय हमने जो बीज बनाया है उसको हम किसानों को फ्री में देते हैं और हम यही चाहते हैं इससे किसानों को बढ़ावा मिले वह ज्यादा से ज्यादा इसे उगाएँ|

इसके अलावा हाल ही में पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा टॉप एग्री स्टार्टअप में हमें सम्मानित भी किया गया है।

भविष्य हेतु योजना :

अनंत जी बताते हैं कि जो और बीएचआई बीज हैं बाकी उनको भी हम चाहते हैं कि उत्तराखंड में ही उगाया जाए क्योंकि यह सब बाहर से ही आते हैं जबकि इनकी मार्केट में बहुत डिमांड है।

इसकी खासियत है कि इसकी अच्छी उपज होती है और किसानों का इसमें बहुत मुनाफा होता है जैसे अभी और फसल किसान उगाते हैं तो उस फसल का उन्हें कम पैसा मिलता है और पहाड़ों में वैसे भी उगाना बहुत कठिन है

तो यदि पहाड़ों में ऐसी फसलें जिनको कि कोई जानवर भी नुकसान ना पहुंचाएं और उसकी वैल्यू भी मार्केट में अच्छी हो ऐसी फसल किसान उगाए तो उनको काफी फायदा हो सकता है और यहाँ के लिए यह चीज अच्छी है और कोविड के बाद इसकी काफी डिमांड भी बड़ी है और जो डायबिटीज के मरीज होते हैं उनके लिए भी बहुत अच्छा होता है और जिन्हें हार्ट की समस्या होती है उनके लिए भी यह फायदेमंद होता है, और यह उपभोगताओं के लिए और किसान दोनों के लिए बहुत अच्छा है तो इस फसल को हम ज्यादा से ज्यादा प्रमोट कर रहे हैं।

मुख्य समस्याएँ :

अनंत जी बताते हैं की समस्याएँ तो बहुत आयी हैं, मैं फार्मिंग बैकग्राउंड से नहीं था और मेरा फील्ड भी अलग था तो खेती वगैरा हमें आती नहीं थी तो खुद हमने खेती सीखी लगभग 3 साल तक हम रिसर्च करते रहे कि कैसे खेती होती है कैसे इसमें मुश्किलें आती हैं मार्केटिंग सेल्स कुछ नहीं पता था शुरुआत में उसके बाद हमने RKVY स्कीम है उसमें हमने अप्लाई किया तो उसमें भी हमें आईआईएम IIM काशीपुर से ट्रेनिंग मिली और उसमें हम फंडिंग भी जीते जो कि लगभग 25 लाख की थी और उत्तराखंड में सबसे ज्यादा फंडिंग उस समय हमें ही मिली थी। जिसमें अभी 10 लाख ही आए हैं बाकी 15 लाख आने बाकी हैं और स्टार्टअप में समस्याएँ आती ही है बस आपको इसका सॉल्यूशन करना पड़ता है।

चिया बीज के औषधीय गुण

चिया के बीजों में विभिन्न प्रकार के औषधीय गुण पाएं जाते हैं। चिया सीड्स में ओमेगा फैटी एसिड भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त चिया सीड्स में फाइबर, कैल्शियम, प्रोटीन और अनेक मिनरल्स जैसे पोषक तत्व मौजूद होते है। इस वजह से चिया सीड्स का सेवन शरीर व दिल को बीमारियों से लड़ने के लिए शक्ति प्रदान करता है। चिया सीड्स स्वास्थ के लिए अधिक लाभकारी होते है, विदेशों में इसे सुपर फ़ूड की संज्ञा भी मिली हुई है।

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10159

Success stories on paddy and vegetables

Dr. Anshuman Singh, Scientist, KVK Bharsar, Pauri Garhwal (Uttarakhand)

VCSG Uttarakhand University of Horticulture and Forestry, Bharsar

Success Story-1

Name of the KVK : KVK Bharsar, Pauri Garhwal (Uttarakhand)

Title : Success story on paddy and vegetables

Introduction : Success story of Sh. Virender Singh Negi, vill- Chaid Talla, Block Pabou (Pauri Garhwal)

KVK intervention : FLD on paddy and vegetables

Output : Higher yield and a boost to adopt for the latest technologies as demonstrated by the KVK Bharsar on cereals and vegetables.

Outcome impact: Sh. Virender Singh Negi, vill- Chaid Talla, Block Pabou (Pauri Garhwal) was previously engaged in the traditional farming and cultivated wheat, paddy, finger millet etc in 30 nali or 0.6 ha (6000 m^2). The productivity from these crops were low which resulted in his poor economic condition. He gave up farming to start a small shop but this was also not sufficient. He visited KVK Bharsar and enquired about better productivity of paddy and vegetable crops.

Scientist Dr. Anshuman Singh visited his field and suggested him to cultivate irrigated paddy VL 85 and apply neem coated urea in place of urea to minimize nutrient losses and also the hybrids of vegetables as FLD. Under the supervision of scientist, he raised 10 nalis paddy and earned net profit of Rs. 22,400/-. He also raised off season vegetables like tomatoes, capsicum, french bean, cucumber, bottle gourd, capsicum, summer squash, brinjal, radish etc in 20 nalis. He has earned total net profit of Rs. 2.5 lakhs by selling theses vegetables and paddy. From this return he is planning to start new ventures like poultry and fishery along with farming. He is also planning to increase the area under cereal crops. His success story has inspired practicing farmers from his village and nearby villages to take up farming with revived enthusiasm.

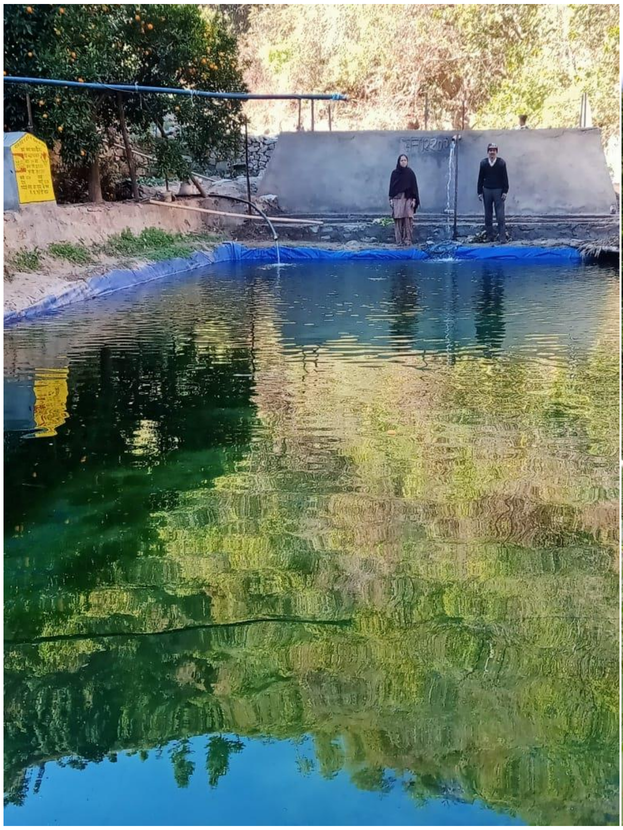
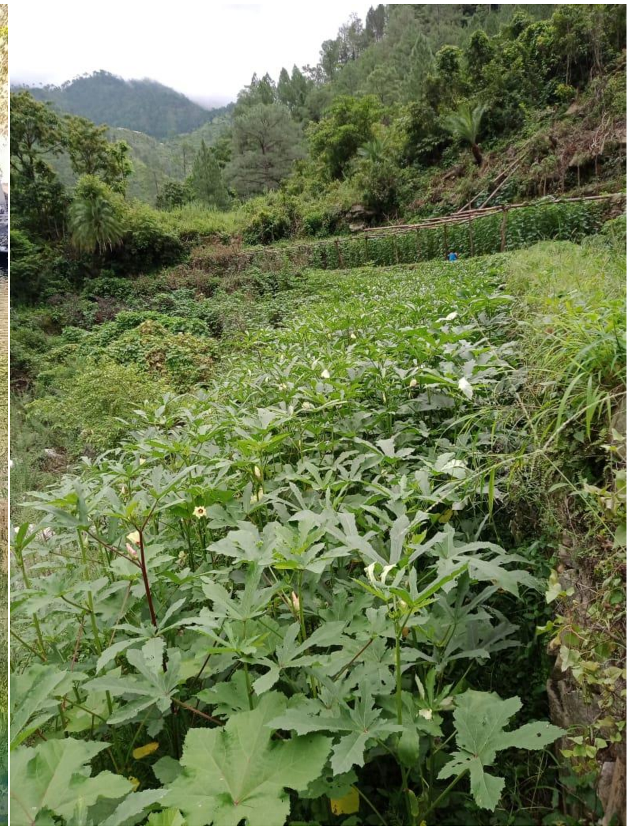

Different interventions carried out by the farmers with the support of KVK, Bharsar

Success Story-2

Name of the KVK : KVK Bharsar, Pauri Garhwal (Uttarakhand)

Introduction : Success story of Sh. Bhagat Singh Negi, Vill- Sarna, block Pabou (Pauri Garhwal)

KVK intervention : FLD on vegetables

Output : Higher yield of vegetables as demonstrated by the KVK Bharsar.

Outcome impact: Sh. Bhagat Singh Negi, Vill- Sarna, block Pabou (Pauri Garhwal) practiced traditional farming. The productivity of tomato, capsicum etc were very low and the produce was not even sufficient for his family. He contacted KVK, Bharsar scientist and enquired about high yielding variety of tomatoes, capsicum and other vegetables**. Dr. Anshuman Singh (Scientist)** visited his field and suggested him to cultivate Heemsona variety of tomato during Kharif, 2014 and also laid demonstration trials (FLD) of other vegetables in his field. Package of practice to be followed was explained in detail. Under the supervision of scientist, he raised 2 nalis tomatoes and earned net profit of Rs. 60,000/-.

On achieving this success under the guidance of scientist he started cultivating improved varieties of crops like capsicum, brinjal, French bean, bottle gourd, raddish, summer squash, cucumber, cabbage, cauliflower etc. He has earned total net profit of Rs. 1.5 lakhs by selling theses vegetables. In Rabi 2014-15 he grew pea variety Arkel on recommendation and supervision by the KVK and earned a net profit of Rs. 55000/- from 2 nali (400 m^2) land only. His success has inspired farmers from his village to grow vegetables for better returns. At present time he is taking the off season vegetable cultivation as his main source of earning for his family and by this his living standards has been uplifted which has also encouraged the nearby villager farmers to adopt the same with the help of KVK Bharsar.

FLD of capsicum and tomato

https://pahadiagromagazine.in
The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869
Volume-1, Issue-9 Article ID: 10160

बहुउद्देशीय फसल चक्र पर आधारित खेती

महावीर सिंह राणा, गाँव बजीरा, ब्लॉक जखोली, जिला रुद्रप्रयाग

आज के समय में अगर खेती के उत्पादन एवं उत्पादकता में होने वाली कमी को देखें, तो इसमें कहीं ना कहीं फसल चक्र सिद्धांत का नहीं होना भी एक महत्वपूर्ण कारण है, क्योंकि फसल चक्र सिद्धांत नहीं अपनाने से उपजाऊ भूमि का क्षरण, जीवांश की मात्रा में कमी, भूमि से लाभदायक सूक्ष्मजीवों की कमी, हानिकारक कीट-पतंगों में व्रद्धि, खरपतवार की समस्या में बढ़ोतरी, जल धारण क्षमता में कमी, भूमि के भौतिक रासायनिक गुणों में परिवर्तन, क्षारीयता में बढ़ोतरी, भूमिगत जल का प्रदूषण, कीटनाशकों का अधिक प्रयोग एवं उनके प्रति प्रतिरोधक क्षमता का विकास देखा गया है।

आज एक निश्चित मात्रा में उत्पादन प्राप्त करने के लिए पहले की अपेक्षा बहुत अधिक मात्रा में खाद का प्रयोग करना पड़ रहा है, क्योंकि भूमि में उर्वरक उपयोग क्षमता का मूल्यहास बढ़ गया है। इन सब से बचने के लिए हमें फसल चक्र के सिद्धांतों को दृष्टिगत रखते हुए कार्य करना होगा।

महावीर जी बताते हैं कि मैं बहुउद्देशीय फसल चक्र पर आधारित कार्य कर रहा हूँ जो कि अलग अलग है, बागवानी, कीवी, सेब, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन पर कार्य कर रहा हूँ। और मैं 2006 से इस क्षेत्र में बागवानी और कृषिकरण पे और किसानों से संबंधित कार्य कर रहा हूँ। मैं सबसे पहले 2006 में जन विकास संस्थान के माध्यम से और लोक विज्ञान संस्थान के माध्यम से भारत भ्रमण पर गया था, जिसमे 6 गांव के लोग थे जो की वाटर हार्वेस्टिंग में लिया गया था और यह हिमोत्थान परियोजना के तहत आयोजित किया गया था, जिसमें हम बहुत सी जगह गए जिसमें सोलन हिमाचल प्रदेश, दूधातोली, अन्ना हजारे के यहाँ हेबरे बाजार गए तो वहाँ हमने देखा कि वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से कैसे खेती की जा सकती है और इसमें क्या-क्या किया जा सकता है तो उस समय हमने जल, जंगल, जमीन इन तीन मुद्दों पर कार्य किया जमीन का सुधारीकरण, वर्षा जल का संरक्षण, भविष्य के लिए जल नीति कैसे करें इसके लिए हमने अपने क्षेत्र में चाल खाल का निर्माण करवाया और उसमें जो हमारी संस्था थी लोग विज्ञान संस्थान देहरादून और हमारी सहयोगी संस्था थी जन विकास संस्थान इसके पश्चात हमने इस घाटी में एक मंच बनाया हिलाइंग गार्ड जलागम क्षेत्र के नाम से और इस जल संरक्षण में 27 गांव आए उसके बाद हमने यहाँ धीरे-धीरे काम करते रहे और इसके अलावा श्री विधि पर काम किया और श्री विधि से हमने एक दाने से 39 बालियाँ निकाली जिसमें हमने धान और गेहूँ दोनों में किया और इसमें हमारा श्री विधि से गेहूँ में परिणाम बहुत अच्छा रहा जिसमें एक बाली से 26 से 33 दाने निकले।

और उसके लिए हमने जैविक पद्धति से कार्य किया और 2006 से 2012 तक हमने इसमें कार्य किया।

फिर उसके बाद हमने महिला कार्य बोज को कम करने पर भी अपने क्षेत्र में कार्य किया कि महिलाओं के समय की बचत से महिला कार्य बोज को कम कैसे किया जा सके तो हमने 2009 में पशु लोग देहरादून से 16000 की नेपियर घास मंगवाई थी आज हमारी घाटी में लगभग नेपियर घास का भरपूर उत्पादन है जिसमें 4 महीने महिलाओं को जंगल नहीं जाना पड़ता है।

जिससे महिलाओं का कार्य बोज कम हुआ और 6 महीने का घास हमारा नेपियर से तैयार हो जाता है जिससे हमारे दो फायदे हुए एक तो पर्वतीय कृषि में डाल धार खेत होते हैं तो एक तो मिट्टी का बहाव कम हुआ और जल कटाव कम हुआ और जो उर्वरक हमारी बह जाती थी नेपियर घास ने उसकी रोकथाम की और यह अच्छी ग्रोथ कर रहा है।

अपने ही गांव से हमने इसकी शुरुआत की और ₹6 / kg हमने यह घास बेची और टिहरी जिले के गांव में भी हमने यह घास दी और जो डैम प्राधिकरण के तहत कार्य कर रहे थे उन लोगों ने भी हमसे यह घास खरीदी और आज जखोली विकासखंड में नेपियर घास का अच्छा उत्पादन हो रहा है।

उसके बाद चाल खाल जल संरक्षण में कार्य किया गांव से ऊपर जंगलों में डायवर्सन रैन बनवाए। उसके बाद हमने छोटे-छोटे ब्रांच में यहाँ नर्सरी का उत्पादन किया। जिसमें शहतूत, आंवला, वन पंचायत का गठन वन पंचायत में कैसे प्रबंधन हो और हमने तीन-चार गांव में शहतूत के पौधे भरपूर मात्रा में लगाए और अब लोग स्वत ही लगा रहे हैं और उसमें भी महिला कार्य बोज कम हुआ शहतूत से भी पशुओं के लिए चारा निकला और शहतूत हमारे पास दो-तीन प्रकार का है जो अच्छा विकसित रहा है।

उसके बाद हमने सामूहिक खेती के ऊपर विशेष ध्यान दिया और 2006 में ही जखोली विकासखंड के अंदर कीवी का पौधा लाया जोकि सोलन हिमांचल प्रदेश से मंगवाया था यह भी हम जलागम परियोजना के तहत ही लाए थे और उस समय हमारे क्षेत्र में कीवी के बारे में कोई नहीं जानता था आज हमारे क्षेत्र में कीवी का भरपूर उत्पादन हो रहा है जिसमें बजीरा न्याय पंचायत के अंतर्गत 16 गांव आते हैं उनसे हमें कीवी का उत्पादन मिल रहा है।

लेकिन कीवी को पहले यहाँ कोई नहीं जानता था सबसे पहले हमने इसके 10 किसान तैयार किये और शुरुआत में हमने 120 पौधे लाए थे जो हमने अन्य लोगों को भी पौधे दिए थे और 2006 से मैं किसानों को जागरूक करने का कार्य कर रहा हूँ उसके बाद हमने अपने यहाँ कृत्रिम गर्भाधान पर भी कार्य किया जिसमें बद्री गाय से सीमेन करके देसी गाय तैयार कर ली है आज हमारे क्षेत्र में 80 परसेंट गाय पर काम कर लिया है जिससे नस्ल सुधार हो गई है।

उसके पश्चात हम इसी में कार्य करते रहे फिर पंडित दीनदयाल संकुल परियोजना आयी जिसमें हमारे यहाँ मूल्यांकन हुआ उसके बाद हमने सात बिंदु पर कार्य किया जो निम्न प्रकार से हैं।

मधुमक्खी पालन मधुमक्खी पालन में इंडिका प्रजाति है वह धीरे-धीरे क्षेत्र में विलुप्त हो रही थी जो हमारे पारंपरिक घर थे उनमें अपना घर बनाती थी लेकिन अब सीमेंट के भवन बन गए हैं और लोगों ने उसके बाद उन्हें सराह नहीं फिर पुनः हमने प्रचार करवाया यह प्रजाति लुप्त हो रही है कृषि की घट रही है और धीरे-धीरे हमने मधुमक्खी पर काम किया तो आज हमारे कुछ गांव में मधुमक्खी का काम चल रहा है और मेरे पास खुद 12 से 15 आले हैं जिससे सालाना 40 kg शहद निकलता है और जो मैं 7 से 8 सौ रुपए प्रति kg बेचता हूँ।

मशरूम की खेती इसमें हमने अपनी न्याय पंचायत में डिंगरी मशरूम का सफल प्रशिक्षण किया मशरूम को भी यहाँ कोई नहीं जानता था तो वह भी हमने करके दिखाया, और लोगों को जागरूक किया उन्हें सिखाया लेकिन भूसा ना मिलने के कारण से यह परियोजना पिछड़ गई और हमारे पास 15 यूनिट मशरूम की थी और इसकी दर हमने ₹200 प्रति किग्रा रखी थी।

संगंध, सुगंधित फसल उत्पाद इसमें हर्बल जड़ी बूटी रोजमेरी इनका भी हमने अपने क्षेत्र में प्रचार किया कि यह फसलें भी यहाँ हो सकती हैं और खुद भी हमने इसकी खेती की।

हाईटेक नर्सरी इसके अंतर्गत हमने हाईटेक पाली हाउस लगाएं जो कि हमारे पास तीन यूनिट हैं और यह भी हमने 16 गांव के अंतर्गत करवाया और हमारे पास हाईटेक मिस्ट चैंबर भी है जिसमें प्लांट अच्छे विकास करते हैं और हमने ग्राफ्टिंग में भी काम किया जैसे माल्टा के पौधे में नारंगी लगा सकते हैं।

बीज बैंक की स्थापना हमारे जो पारंपरिक बीज है उनमें संरक्षण किया जाए सरकार पे हमने दबाव बनाया था कि हमारे बीजों को संरक्षित किया जाए और आज के समय यूज एंड थ्रो हो रहा है हाइब्रिड बीज फेंका जा रहा है दोबारा उसका लाभ नहीं मिल पाता है।

फल संरक्षण फल संरक्षण में हमने माल्टा के जूस का उत्पादन करना यह भी हमारी एक छोटी सी यूनिट थी लेकिन कोरोना काल में हमारा 5 कुंतल जूस खराब हो गया।

जड़ी बूटी जड़ी बूटी में भी हमने अपने लोगों को जागरूक किया |

तो इन्हीं बिंदुओं में हमने अपने क्षेत्र में काम किया उसके बाद कोरोना कल आ गया तो उस समय में अपने यहाँ

राष्ट्रीय रोजगार गारंटी के तहत बंजर भूमि पर काम किया और वहाँ पर हमने जैविक विधि से आलू पर कार्य किया जो कि हमने कम से कम दो हेक्टेयर में आलू का उत्पादन किया।

और वर्तमान में हम कीवी और ट्राउट फिश का उत्पादन कर रहे हैं। और मेरे पास तो तालाब हैं जो मत्स्य विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये गये हैं |

और उसके बाद हमने एक मंच बनाया ग्रामोदय सहकारी समिति जो श्रम मंत्रालय से रजिस्ट्रेशन है उनके साथ मिलकर मैं इसका संचालन करता हूँ।

आमदनी : **कीवी से व मत्स्य पालन मधुमक्खी से मेरा सालाना नेट प्रॉफिट 1 लाख तक का हो जाता है और कीवी के वर्तमान में 6 पेड़ फल दे रहे हैं जिसमें 4 से 5 क्विंटल फल उत्पादन हो जाता है और अभी हमने 600 पेड़ लगा रखे हैं और सेब के हमारे क्लस्टर में 9 यूनिट लगी हैं जिसमें 9 किसान हैं और एक किसान के पास 500 प्लांट लगे हुए हैं।**

भविष्य हेतु योजना :

राणा जी बताते हैं कि भविष्य में हमारा यही प्लान है कि जो हम कर रहे हैं इसको मार्केट दिलाया जाए अभी हमने प्राकृतिक कृषि मंच बनाया है जो हम यदि काम करें तो हमारा एक Logo हो हमारे जो किसान हैं उनका हम एक पैटर्न बनाएं उनको एक बास्केट के रूप में एक डिलीवरी के रूप में एक मार्केट के रूप में कार्य करना है और सरकार से मिलकर हमने यह कार्य किया है रायपुर की जो मंडी है जिसका शिलान्यास नवंबर में होना है हम यहाँ पर छोटे फेडरेशन के माध्यम से अनाज पहुंचाएंगे और वहाँ से लोग बास्केट के रूप में लेंगे।

मुख्य समस्याएँ :

महावीर जी बताते हैं कि समस्याएँ तो रहती हैं शुरू-शुरू में लोग मजाक बनाते थे लेकिन आज के समय लगभग 100 काश्तकार हमारे पीछे रोटी खा रहे हैं लेकिन अभी हमें ऐसी चीजों की खोज करनी होगी जो इस क्लाइमेट में होती है जैसे अभी खजूर हमारे यहाँ बहुत अच्छे से हो सकता है उसकी डिमांड भी है तो समस्याएँ तो हर कार्य में आती हैं मानसिक तनाव रहता है जूझना पड़ता है लेकिन हम निरंतर कार्य करते रहे हैं और अभी भी कर रहे हैं।

मिल चुके हैं ये सम्मान

2017 में किसान भूषण से सम्मानित और 25000 की धनराशि
सोनाली ट्रैक्टर के द्वारा भी सम्मानित किया गया।
जिले में भी उन्नशील किसान से सम्मानित किया गया।
इसके अलावा विभिन्न मेलों प्रदर्शनियों में अनेक प्रमाण पत्रों से सम्मानित।

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10161

परम्परागत फसलों के साथ स्ट्रॉबेरी एवं मशरूम की खेती

अनुज राणा, गाँव बड़कोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी

परंपरागत फसलों की खेती में किसान हर साल भारी नुकसान झेल रहे हैं। कभी बारिश तो कभी भयंकर सूखे की मार का असर किसानों पर पड़ रहा है। यही वजह है कि किसान भारी नुकसान से बचने के लिए नई फसलों की तरफ रुख कर रहे हैं। हाल फिलहाल देखा गया है कि किसानों ने स्ट्रॉबेरी की फसलों में भी दिलचस्पी दिखाना शुरू कर दिया है।

स्ट्रॉबेरी को मुनाफेदार फसलों की श्रेणी में गिना जाता है। पूरी दुनिया में इसकी कुल 600 किस्म मौजूद हैं लेकिन भारत में इसकी कुछ ही प्रजातियों की खेती की जाती है इसकी खेती समान्य तरीकों के साथ-साथ पॉलीहाउस, हाइड्रोपॉनिक्स में भी कर सकते हैं, हालांकि इसे ठंडे प्रदेशों की फसल कहा जाता है। लेकिन इसे मैदानी क्षेत्रों में भी आसानी से उगाया जा सकता है। 20 से 30 डिग्री तापमान उपयुक्त रहता है। तापमान बढ़ने पर स्ट्रॉबेरी पौधों में नुकसान होता है और उत्पादन में गिरावट आती है।

अनुज जी बताते हैं कि मैं तो अभी पढ़ाई कर रहा हूँ मेरी एम.एस.सी. चल रही है लेकिन पिताजी के साथ मैं भी हाथ बटा लेता हूँ और मेरे पिताजी जी 2011 से यह सब करते आ रहे हैं और बागवानी हमने 2020 से शुरू की सबसे पहले हमने टमाटर से शुरुआत की और टमाटर का प्रोडक्शन हम अच्छे लेवल पर करते थे जिसमें सीजनली हमारा टमाटर 60 से 70 हजार तक निकल जाता था और 2013 आपदा के दौरान हमने टमाटर की खेती से अच्छा खासा मुनाफा लिया था और 2014-15 से टमाटर के रेट थोड़े डाउन हो गए और 2016 से हमने टमाटर के साथ कद्दू और खीरा लगाना शुरू किया।

शुरू में हमने टमाटर 6 नाली में लगाया था और उसके बाद हम सीजनली सब्जियां उगाने लग गए थे। और उसके बाद उद्यान विभाग की सहायता से हमें पॉलीहाउस भी मिला जिसमें हम सब्जी का उत्पादन करते थे और सब्जी से हमारा सीजनली एक लाख के आसपास टर्नओवर होता था। और सब्जी में हमारे क्षेत्र में ज्यादा फायदा नहीं मिल पा रहा था और कंपटीशन भी सब्जियों में बहुत हो गया था और मार्केटिंग भी जल्दी से मिल नहीं पाती थी जिस कारण से सब्जी खराब हो जाती थी, जिस वजह से हमने 2020 से सब्जी का उत्पादन करना बंद कर दिया वैसे अभी हम सब्जी का उत्पादन करते हैं लेकिन अपने प्रयोग के लिए अपने खाने के लिए ही उगाते हैं और इसके

अलावा हम 2020 से बागवानी की तरफ गए और हमारे यहाँ उद्यान विभाग ने स्ट्रॉबेरी का प्लांट लगवाया।

और उद्यान विभाग की सलाह पर ही हमने टमाटर, कद्दू और खीरे के साथ स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू की जो कि हमने पांच नाली में हजार पौधे स्ट्रॉबेरी के लगाएं और इसे तैयार होने में पूरे आठ माह का समय लगा और इन पौधों से हमें प्रतिदिन अच्छा मुनाफा मिल रहा है यह हम ₹200 प्रति किलो तक बेचते हैं।

जिससे प्रतिदिन 5000 तक आमदनी होती है। और खीरा टमाटर से जहाँ 60 हजार तक आमदनी होती थी वही स्ट्रॉबेरी से आप प्रति महीने डेढ़ लाख रुपए तक कमा सकते हैं।

राणा जी बताते हैं कि स्ट्रॉबेरी की खेती में कीड़े नहीं लगते हैं और स्ट्रॉबेरी के पौधे सितंबर से अक्टूबर के महीने में लगाये जाते हैं जो कि साल में एक बार मार्च से जून तक फल देती है।

और इसमें एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन, मिनरल्स व न्यूट्रिशन का अच्छा स्रोत है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।

आगे राणा जी बताते हैं कि स्ट्राबेरी की खेती किसी भी प्रकार की मिट्टी पर की जा सकती है। लेकिन बलुई दोमट मिट्टी इसके विकास के लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती के लिए 5.5 से 6.5 पीएच मान वाली मिट्टी हो तो और भी बेहतर है। बता दें कि स्ट्राबेरी जैम, जूस, आइसक्रीम, मिल्क-शेक, टॉफियां बनाने के काम आती है। इसके अलावा कई तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट बनाने में भी इसके फलों का उपयोग किया जाता है।

और स्ट्राबेरी की फसल से अच्छी उपज हासिल करना पूरी तरह से जलवायु और पौधों की संख्या पर निर्भर करता है। अगर सही तरीके से पौधों की देखभाल की जाए तो निश्चित ही किसान एक एकड़ में तकरीबन 80 से 100

क्विंटल फलों का उत्पादन कर सकते हैं। और विशेषज्ञों के अनुसार इसके एक पौधे से 800-900 ग्राम फल प्राप्त हो जाते हैं।

और इसकी मार्केटिंग हम उत्तरकाशी, चिन्यालीसौड़ एवं लोकल मार्केट में ही करते हैं इसके अलावा हमारे पास अमरूद के प्लांट हमें केवीके चिन्यालीसौड़ के द्वारा दिए गए जिसमें 15 पौधे लगाए हुए हैं और आम हमने आम्रपाली प्रजाति के लगाए हुए हैं जिसमें की वर्तमान समय में हमारे पास 25 से 30 पौधे लगाए हुए हैं जो कि केवीके चिन्यालीसौड़ के द्वारा ही दिए गए थे और नींबू के भी 15 पौधे लगाए हुए हैं और प्रोडक्शन हमें सिर्फ स्ट्रॉबेरी और नींबू से ही हो रहा है आम से हमें अगले साल तक उत्पादन होना शुरू हो जाएगा।

आगे राणा जी बताते हैं कि स्ट्रॉबेरी की हम नर्सरी भी तैयार करते हैं इसमें मदर प्लांट में रनर्स होते हैं जो कि बरसात में निकलते हैं तो उन्हें हम डिस्पोजल में तैयार करते हैं और एक पौधे का रेट ₹20 है लेकिन उद्यान विभाग के रेट के अनुसार हम उन्हें ₹10 का एक पौधा देते हैं और यदि खुले रनर्स लगाएंगे तो ₹4 का पड़ता है।

और नर्सरी हम बरसात में जुलाई से करना शुरू करते हैं और उसे समय रनर्स बनना शुरू होता है इसके लिए हम पहले कंपोस्ट बनाते हैं जिसमें गोबर मिट्टी और रेत को मिलाकर डिस्पोजल में तैयार करते हैं और फिर डिस्पोजल में पौधों की रोपाई कर देते हैं और थैलियों में भी हम इसकी नर्सरी तैयार कर सकते हैं और इसके ऊपर से ग्रीन नेट डालना पड़ता है जिससे पौधे जले ना और स्प्रिंकलर चलाना पड़ता है, इसके ऊपर दो से तीन महीने इसकी देखरेख करते हैं जब तक जड़े विकसित नहीं हो जाती है उसके बाद हम इसे विक्रय करते हैं और यह नर्सरी उत्तरकाशी उद्यान विभाग ने दी है, और डिस्पोजल में हम पौध तैयार सिर्फ डिमांड में ही करते हैं क्योंकि डिस्पोजल में पौध तैयार होने के बाद सूखने के बहुत कम प्रतिशत होता है और जो बिना डिस्पोजल की पौध होती है वह सूख जाती है।

और इसके अलावा हमने 2020 से ही मशरूम का कार्य भी शुरू किया जिसमें हम बटन मशरूम उगाते हैं जिसके लिए हमने एक कमरा तैयार किया हुआ है जिसमें हमने 200 बैग लगाए हुए हैं और मशरूम की हमारे यहाँ अच्छी डिमांड है और लोग इसे पसंद भी करते हैं और मशरूम से हमारा 30 से 35 हजार तक का फायदा हो जाता है।

भविष्य हेतु योजना :

राणा जी बताते हैं कि भविष्य में बागवानी में ही आगे कार्य करना है इसको ही बड़े पैमाने पर करेंगे और हमारा ज्यादा ध्यान स्ट्रॉबेरी पर ही है इसका प्रोडक्शन और बढ़ाना है इसके लिए हम नयी पौधे भी तैयार कर रहे हैं उन्हें लगा भी रहे हैं और मशरूम के लिए सोचा है कि AC फार्म खोलने की और हमारे पास अभी तीन रूम खाली पड़े हुए हैं और AC रुम में टेंपरेचर मेंटेन करना आसान होता है और चिन्यालीसौड़ में गर्मी ज्यादा है जिस कारण मशरूम उत्पादन में समस्या होती है तो भविष्य में AC टेक फार्म खोलने की हम लोग योजना बना रहे हैं।

मुख्य समस्याएँ :

राणा जी बताते हैं कि समस्याएँ तो हर कार्य में होती ही हैं हम अगर स्ट्रॉबेरी की बात करें तो हमारे यहाँ सबसे बड़ी समस्या मार्केटिंग की आती है क्योंकि लोकल में इसकी अभी ज्यादा मार्केटिंग नहीं है और स्ट्रॉबेरी जल्दी खराब हो जाती है यदि तोड़ने के बाद एक या दो दिन में मार्केट तक नहीं पहुंची तो यह तुरंत खराब हो जाती है और यदि हमने प्रोडक्शन ज्यादा कर दिया तो मार्केटिंग यहाँ हो नहीं पाएगी और देहरादून पहुंचने में बहुत समस्याएँ आती हैं तो मार्केटिंग की बहुत बड़ी समस्या है।

आगे राणा जी बताते हैं कि विभाग हमें बहुत सपोर्ट कर रहा है उद्यान विभाग के द्वारा हमें स्प्रिंकलर, डीप इरीगेशन, मल्चिंग जितने भी इंस्ट्रूमेंट लगते हैं स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए वह सब सिस्टम हमारे पास उपलब्ध हैं इसके अलावा एंटी हेल नेट है तो खेती करने में कोई समस्या नहीं है बस समस्या मार्केटिंग की है यदि हम 5 क्विंटल से 10 क्विंटल तक का प्रोडक्शन करें तो इतनी यहाँ पर स्ट्रॉबेरी की खपत नहीं है और यहाँ पर 50 kg तक प्रतिदिन बिकता है वह भी बहुत मुश्किल से और केवीके वाले प्रशिक्षण देते रहते हैं और उद्यान विभाग ने ही प्लांट लगाकर दिए हैं और इसकी मल्चिंग हर बार चेंज करनी पड़ती है क्योंकि निकालते समय समस्या होती है तो मल्चिंग का वन टाइम यूज होता है तो विभागों से हमें काफी सपोर्ट मिला है और मिल भी रहा है।

https://pahadiagromagazine.in
The Pahadi Agriculture e-Magazine
ISSN: 2583-7869
Volume-1, Issue-9
Article ID: 10162

मुर्गी पालन : पहाड़ी क्षेत्रों में आमदनी का एक बहतरीन ज़रिया

जोगा सिंह सामंत, गांव सिंधागाट, ब्लॉक बाराकोट, जिला चंपावत, उत्तराखण्ड़

कृषि के क्षेत्र में पोल्ट्री फार्म का व्यवसाय काफी तेजी से बढ़ रहा है। सरकार भी पोल्ट्री फार्म के विकास को बढ़ाने के लिए प्रजनन, पालन, प्रोसेसिंग और हैचिंग प्रक्रियाओं में निवेश कर रही है। पोल्ट्री फार्मिंग में मांस व अंडे के रूप भोजन प्राप्त करने के उद्देश्य से मुर्गी और बत्तख जैसे पक्षियों का पालन किया जाता है। किन्तु पोल्ट्री फार्मिंग के व्यापार में मुख्य रूप से मुर्गियों को ही पाला जाता है, जिस वजह से इसे मुर्गी पालन या कुक्कुट पालन भी कहते हैं।

ब्रायलर पोल्ट्री फार्म

ब्रायलर पोल्ट्री फार्म में मुर्गियों की काफी साफ-सफाई और संवेदनशीलता से देखभाल की जाती है। मुर्गियों का खाने के लिए खास तरीके का फीड और आसपास काफी साफ-सफाई रखी जाती है, जिससे मांस का और मुर्गी के अंडों से अच्छे चूजे मिल सकें, हालांकि कम समय में ही अंडे और मांस का प्रोडक्शन लेना होता है, इसलिए मुर्गियों के रहने की जगह का तापमान भी नियंत्रित किया जाता है |

एक चूजा करीब 120 दिन में तंदुरुस्त मुर्गी के रूप में तैयार हो जाता है, जबकि अंड़ों से ब्रायलर चूजे निकलने में करीब 30 दिन लग जाते हैं। पोल्ट्री फार्म की इस तकनीक से कारोबार करने पर मुर्गी की देखभाल आदि में थोड़ा खर्चा जरूर होता है, लेकिन इस बिजनेस में नुकसान की संभावना ना के बराबर रहती है।

जोगा सिंह जी बताते हैं कि पोल्ट्री का कार्य मैंने 2008 से शुरू किया और मुझे यह कार्य करते-करते 15 साल हो गए हैं और इसमें हम बॉयलर मुर्गी का व्यवसाय करते हैं और हम मुर्गी पालन के साथ-साथ सप्लाई का कार्य भी करते हैं और मुर्गी के बच्चों को पाल के उन्हें बड़ा करके अपने फार्म पर बेचते भी हैं।

और शुरुआत में मैंने 1000 मुर्गियों से शुरू किया और सबसे पहले मैंने बाड़ा बनवाया उसके बाद इसमें मुर्गी पालन शुरू किया और मैं आर्मी से रिटायर्ड हूँ और मैंने इसमें अच्छा खासा बाड़ा बनाया है जिसमें मैंने 1000 चूजों से शुरू किया था।

बाड़ा बनाने में लगभग 26 लाख की लागत लगी थी और वर्तमान समय में 12000 की पोल्ट्री है और हम सिर्फ बॉयलर प्रजाति का ही व्यवसाय करते हैं |

आगे जोगा जी बताते हैं कि मुर्गी पालन में मुर्गियों की देखरेख करना बहुत आवश्यक होता है जैसे चारा समय-समय पर देना पड़ता है जिसका एक रूटीन होता है और क्लाइमेट का विशेष ध्यान देना पड़ता है आजकल सर्दियों

में अंगीठी लगाकर टेंपरेचर बनाना पड़ता है और गर्मियों में पंखे लगाने पड़ते हैं जिससे मुर्गियां अनुकूल वातावरण महसूस कर सकें, गर्मियां ज्यादा होने पर पंखे लगाने पड़ते हैं पानी छिड़कना पड़ता है और टेंपरेचर को मेंटेनेंस करना पड़ता है और मुर्गियों का चारा हम बाहर से ही मंगवाते हैं जिसमें पहले फ्री स्टार्टर देते हैं फिर स्टार्टर देते हैं फिर फिनिशर देते हैं।

आगे जोगा जी बताते हैं कि मुर्गियों की अच्छी वृद्धि और उत्पादन क्षमता को बनाए रखने के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में आहार देना जरूरी होता है। इसके लिए प्रोटीन, शर्करा, विटामिन, खनिज, और पानी की उचित मात्रा को बनाए रखें। मुर्गियों को स्वस्थ आहार मिलने पर उनकी वृद्धि काफी अच्छी होती है।

मुर्गी पालन में मुर्गियों के आहार के लिए घर पर भी दाने के मिश्रण को तैयार कर सकते हैं, यदि घर में मिश्रण को तैयार करने में समस्या हो रही है, तो आप बाजार से भी इस मिश्रण को खरीद सकते है। और इसकी मार्केटिंग हम लोकल में ही करते हैं और लोग गाड़ी से आते हैं या गाड़ी से सप्लाई देनी पड़ती है, और खुद भी लोग खरीदने फॉर्म में पहुंच जाते हैं आगे जोगा जी बताते हैं कि **सालाना हमारा 5 से 6 करोड़ का टर्नओवर** हो जाता है और मेरी सप्लाई भी है जिसमें 30 से 40000 मुर्गियों के बच्चे सप्लाई प्रतिदिन देते हैं जो की पिथौरागढ़ चंपावत और बैरीनाग में होती है।

आगे जोगा जी बताते हैं कि यदि आप कोई ऐसा व्यापार करना चाहते हैं जिसमें कम लागत और अधिक मुनाफा हो तो पोल्ट्री फार्म का व्यवसाय आपके लिए एक बेहतर विकल्प हो सकता है। इस व्यवसाय को आप तभी चालू कर सकते है जब आपको इसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी

होगी। इसमें आपको किस गुणवत्ता वाली मुर्गी से कितना मुनाफा कमाया जा सकता है इस बात की विशेष जानकारी होनी चाहिए। पोल्ट्री फार्म से मिलने वाले मांस और अंडे की मांग पूरे वर्ष रहती है। जिस वजह से यदि आप इस व्यवसाय में प्रवेश करते हैं, तो अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। साल के 12 महीने लोग आहार के रूप में मांस और अंडो का सेवन करते हैं यही कारण है कि बाजार में इसकी मांग बनी रहती है और मुनाफा भी अधिक होता है।

और हमने ब्रायलर मुर्गी को ही अपने फार्म पर रखा है। इस नस्ल की मुर्गी को केवल मांस के लिए पाला जाता है। अन्य मुर्गियों की तुलना में यह तेजी से बढ़ने वाली मुर्गी है, जिस वजह से यह मुख्य रूप से मांस के लिए इस्तेमाल की जाती है।

भविष्य हेतु योजना :

जोगा जी बताते हैं कि भविष्य में मेरा यही प्लान है कि मुर्गी पालन के साथ-साथ बकरी पालन का भी सोचा है जिसके लिए मैंने शेड / बाड़ा वगैरह सब तैयार कर लिया है, और अगले साल से बकरी पालन का कार्य भी शुरू कर दूंगा और पोल्ट्री को भी और बड़े पैमाने पर करने का सोचा है, हाल फिलहाल हम अभी बड़े पैमाने पर कर रहे हैं लेकिन मैं इसे अपने क्षेत्र में हर जगह फैलाना चाहता हूँ, इसकी मार्केटिंग को और बड़े शहरों तक पहुंचाना चाहता हूँ जिससे अधिक से अधिक फायदा हो सके।

मुख्य समस्याएँ :

जोगा जी बताते हैं कि मुर्गी पालन में समस्याएँ तो आती ही हैं और न इनका कोई इंश्योरेंस होता है जो भी नुकसान होता है वह खुद ही भुगतना पड़ता है, और कभी अच्छे रेट नहीं मिल पाते हैं और मण्डियों के अपने रेट चलते हैं तो इसमें फायदा नुकसान लगाना थोड़ा मुश्किल है और लेबर भी लगा रखी है लाइट का बिल भी अच्छा खासा आ जाता है, और यातायात के सुविधा के अभाव में भी काफी दिक्कतें आती हैं जिसमें बहुत खर्चा होता है और हमारे यहाँ डॉक्टर मिलते नहीं हैं, दवाइयाँ समय से उपलब्ध नहीं हो पाती हैं और अब तो हम खुद ही इस काम में इतना परफेक्ट हो गए हैं कि खुद ही से ही इलाज करते हैं इतना अनुभव इस कार्य में हो गया है तो समस्या होती है लेकिन हम उस समस्या पर खुद ही निरंतर कार्य करते रहते हैं जिससे समस्याएँ भी दूर होती रहती हैं।

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9 Article ID: 10163

राज्य निर्माण आन्दोलन से खेती किसानी तक का सफर

पूर्व सैनिक/ उतराखण्ड़ आंदोलनकारी हयात सिंह राणा

जखोली-कपणिया, ब्लॉक जखोली, जिला रुद्रप्रयाग

किसी भी फलोद्यान की कामयाबी सही रोपण सामग्री की उपलब्धता पर निर्भर करती है। शुरुआती रोपण सामग्री पर ही आखिरी फसल की मात्रा और गुणवत्ता निर्भर करती है। शुरुआती वर्षों में अगर कोई भी गलती हो जाए, तो इसे बाद के वर्षो में दुरुस्त नहीं किया जा सकता और इसके कारण उत्पादकता व फलोद्यान मालिकों की आय को स्थायी नुकसान पहुंचेगा। फलों में अपेक्षित उत्पादकता न हासिल कर पाने में सबसे बड़ी दिक्कत असली बीजों और सही रोपण सामग्री की अनुपलब्धता है। रोपण सामग्री को लगातार वैज्ञानिक रूप से पैदा किए गए अधिक पैदावार वाले मातृ-पौध से लिया जाना चाहिए जो कीटों और रोगों से मुक्त हों।

हयात सिंह राणा जी बताते हैं कि मैं 1993 में आर्मी से सेवानिवृत हुआ था उसके बाद हमने उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन शुरू किया, 1994 से और उत्तराखंड राज्य निर्माण होने के बाद हमने खेती का काम शुरू किया। और खेती का काम शुरू करने के साथ-साथ हम प्रेरक भी रहे, जड़ी बूटी पर हमने काम किया और जड़ी बूटी में प्रशिक्षण लेने के बाद मैं यहाँ पर प्रशिक्षक भी रहा हूँ, मास्टर ट्रेनर के तौर पर मैं गांव में लोगों को प्रशिक्षण देता था और जब सरकार बनी तो हर जिले में जिला भेषज इकाई गठित की गई तो उसमें मैं मास्टर ट्रेनर के तौर पर मैंने काम किया था और 2004 में यहाँ पर भारत सरकार और उत्तराखंड सरकार के सहयोग एवं डॉक्टर महेश शर्मा जी जो कि भारत सरकार में खाद्य एवं ग्राम उद्योग आयोग के अध्यक्ष रहे हैं जिनको पदम श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है उनके नेतृत्व में हमने यह बजीरा संकुल का कार्यक्रम शुरू किया।

आधुनिक नर्सरी भारत सरकार और उत्तराखंड सरकार द्वारा हमें बजीरा संकुल के नाम से स्ट्रक्चर दिया गया है, और हम माल्टा, कीवी, चूली (खुमानी) नई प्रकार की जितनी भी सब्जियां हैं उनकी नर्सरी ऑर्गेनिक विधि से करते हैं और खुद भी उगाते हैं।

और उसमें चार संकुल बनाए गए जिसमें पहला था बजीरा संकुल रुद्रप्रयाग जिले में भी बिगुण संकुल टिहरी गढ़वाल में कांडीखाल संकुल हरिद्वार जिले में और कौसानी संकुल बागेश्वर जिले में तो इन जिलों में हमने किसानों को प्रशिक्षण देने का कार्य किया और प्रशिक्षण के साथ-साथ हमने स्वयं भी उगाना शुरू किया जिसमें कि हमने कीवी पर बहुत बड़ा फोकस रखा।

और कीवी आज के समय जखोली ब्लॉक में क्विंटल के हिसाब से हो रही है। और हमारे पास जो मिस्ट चैंबर है उसमें 6 महीने में पौध लगाने के लिए तैयार हो जाती है जो पौध 2 साल में होती है। वह 6 महीने में रोपाई के लिए तैयार हो जाती है इसमें नई टेक्नोलॉजी के द्वारा यह बनाई गई है।

आगे हयात जी बताते हैं कि हम कीवी, माल्टा और खुमानी के साथ-साथ सब्जी की पौध तैयार करते हैं और उगाते भी हैं और पौधे हम किसानों को बेचते भी हैं और मैं कई विद्यालयों में भी प्रशिक्षण देने के लिए जो विद्यालय हमें बुलाते हैं वहाँ भी मैं जाता रहता हूँ।

कीवी की कम से कम 15 पौधे हमने लगा रखी हैं जिसमें की दो पौधे पहले से ही फल देते हैं और बाकी फल देने लायक हो गए हैं | माल्टा से भी प्रोडक्शन होता है और खुमानी के लिए अभी इतने हमारे क्षेत्र में अभी लोग जागरुक नहीं हुए हैं लेकिन हमें **गोविंद बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालय पर्यावरण संस्थान अल्मोड़ा** के जो पहले डायरेक्टर थे जो कोरोना काल में देवगत हो गए हैं उन्होंने डिमांड दी थी हमें चूली के 1500 पौधों की उसके बाद नये डायरेक्ट आए हैं उनका इस तरफ कोई ध्यान नहीं है और उसके अलावा हम सब्जी की नर्सरी भी कर रहे हैं और सब्जियों का उत्पादन भी कर रहे हैं और सब्जियों में हम राई, मूली, गोभी, धनिया, प्याज इत्यादि करते हैं।

कीवी नर्सरी से हमारी दो से ढाई सौ रुपए तक पौधे विक्रय हो जाते हैं, तो कभी साल में 600 बिक जाती है तो कभी 1000 तक बिक जाती है, **नर्सरी से सालाना में 40000 तक कमा लेता** हूँ।

और कीवी, माल्टा और सब्जी उत्पादन आदि से 15000 तक का नेट प्रॉफिट होता है और माल्टा से 10 से 15000 का और सब्जी से सीजनली 15 से 20000 तक मेरा नेट प्रॉफिट हो जाता है।

और इसके अलावा ट्रेनिंग भी देता हूँ जहाँ-जहाँ लोग बुलाते हैं।

हमारे यहाँ गोविंद बल्लभ पंत और राष्ट्रीय हिमालय संस्थान का हमारे पास जो स्ट्रक्चर है तो यहाँ प्रशिक्षण देता हूँ। तो यहाँ काफी लोगों को ट्रेन किया है जैसे पौड़ी से टिहरी से श्रीनगर से और अधिकतर वैज्ञानिक लोग आते हैं सीखने के लिए क्योंकि वैज्ञानिकों का यह कहना था कि हम किताबों से पढ़ते हैं लेकिन हम धरातल पर इतना नहीं जानते हैं तो वैज्ञानिक यहाँ बहुत आते हैं सीखने के लिए।

भविष्य हेतु योजना :

हयात जी बताते हैं कि हम चाहते हैं लोग ऑर्गेनिक उत्पादन करें और अपने गांव में रहें, ऑर्गेनिक उगाओ और कार्बनिक खाओ, स्वस्थ एवं लंबा जीवन यापन करो, और जो नहीं तकनीकी है यदि हमें उस तकनीक से जोड़ा जाता है तो हम लोग और प्रेरित करेंगे लोगों इन कामों के लिए पहाड़ो में कृषि की बहुत बड़ी संभावनाएं हैं, और सब्जियों के लिए हम उत्तरप्रदेश पर आधारित हैं, जबकि पहले यातायात और सड़कों की सुविधा पहाड़ों में नहीं थी फिर भी हम सब्जी खाते थे, तो करना तो बहुत कुछ चाहते हैं लेकिन कोई सपोर्ट नहीं करता है और भविष्य में मैंने नर्सरी को और बड़े पैमाने पर करने का सोचा है।

मुख्य समस्याएँ :

हयात जी बताते हैं कि यहाँ पर लोग स्वयं काम करने के लिए इच्छुक नहीं हैं, उनको प्रेरित करना पड़ता है| और जो स्वेच्छा से प्रेरणा लेते हैं वह काफी तरक्की कर रहे हैं ***हमारे यहाँ पर हर सीजन में कई लाखों का माल्टा यहाँ से जाता है तो परेशानियां तो हैं ही पहले सरकार ध्यान देती थी लेकिन वर्तमान में सरकार का कृषि पर कोई ध्यान नहीं है और किसानों को कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है।***

आगे हयात जी बताते हैं कि इसके अलावा उद्यान विभाग के माध्यम से हमें एक वर्मी कंपोस्ट पिट मिला है जिसमें हम खाद बनाते हैं और लोगों को खाद देते भी हैं और यह टैंक 16 फीट / 20 फीट का मिला है जिसमें चार टैंक बनते हैं और एक छोटा सा टैंक पिछले साल कृषि विभाग से भी वर्मी कंपोस्ट पिट बनाने के लिए हमें मिला था।

और DST दिल्ली के माध्यम से हमारे यहाँ पॉलीहाउस भी लगाया गया है जो कि तीन पोली हाउस आए थे जिसमें से की एक पॉलीहाउस मैंने खुद लगाया और अन्य गांव में लगवाए और मैंने उद्यान विभाग के माध्यम से भी एक पॉलीहाउस लगा रखा है जिसमें हम सब्जी उत्पादन करते

हैं और एक मेरे पास ग्रीनहाउस है और एक मिस्ट चैंबर भी उपलब्ध है।

युवाओं को संदेश

हयात जी बताते हैं कि हमारे जो युवा हैं, पढ़े लिखे हैं, बुद्धिमान हैं, वह जान बूझकर बेरोजगार हैं, यहाँ पर इतनी संभावना है लोगों के खेत बंजर पड़े हैं वह कहते हैं हम आपको पैसे देते हैं लेकिन आप हमारी जमीनों को उपजाऊ बनाओ और इसमें पढ़े-लिखे व्यक्ति की बहुत जरूरत है जहाँ में काम कर रहा हूँ वहाँ ***एम. एस. सी. या बी. एस. सी. एग्रीकल्चर*** *के बच्चे होने चाहिए लेकिन वह काम करने को तैयार ही नहीं हैं और उत्तराखंड में ऐसी कोई संभावनाएं नहीं हैं कि आदमी बेरोजगार रहे यहाँ करने को बहुत कुछ है। युवाओं को यही कहना चाहता हूँ कि कर्म प्रधान की ओर जाइए और इस मिट्टी ने हमको सब कुछ दिया है और लिया कुछ नहीं है और ना ही कभी लेगी और भारत कृषि प्रधान देश है आप कृषि के क्षेत्र में अपना हाथ बढ़ाए इसमें बहुत संभावनाएं हैं।*

THE PAHADI AGRICULTURE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10164

जैविक सब्जी, मशरूम उत्पादन एवं पहाड़ी उत्पादों से आत्मनिर्भरता की राह

अनीता प्रकाश, गाँव अलचोना, ब्लॉक भीमताल, जिला नैनीताल

खेती में महिलाओं का योगदान सर्वविदित है, खेत की तैयारी, बुवाई, निराई, गुड़ाई से लेकर फसल कटाई और सफाई तक सभी में महिलाओं की भागीदारी होती है। उत्तराखंड के सन्दर्भ में बात की जाये तो यहाँ महिला किसानों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए कृषि के नए और रचनात्मक तरीकों को अपनाया जा रहा है। वे जैविक खेती की ओर भी कदम बढ़ा रही हैं।

पारंपरिक फसलों के साथ ऐसी फसलें लगाएं जिसमें उनको अच्छी आमदनी हो।

इसलिए किसानों को ज्यादा से ज्यादा सब्जियों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अब महिलाएं भी पहाड़ों में मुनाफे की फसल काट रहीं हैं।

आज हम ऐसी ही महिला के बारे में बात करने वाले हैं जो सब्जी उत्पादन से अच्छा खासा मुनाफा ले रही हैं।

अनीता जी बताती हैं कि सब्जी का उत्पादन मैं मेरी शादी के बाद ही कर रही हूँ जब मेरी शादी हुई थी तो उसके बाद में छोटे लेवल पर ही सब्जी का उत्पादन करने लग गयी थी, उसके बाद मैने जॉब भी की जो कि मैंने टीचिंग लाइन में कुछ समय तक की उसके बाद मेरा बेटा हो गया तो मैंने टीचिंग भी छोड़ दी फिर उसके बाद गांव में महिला समूह और सामाजिक कार्य करने लग गयी और जब महिलाओं से जुड़ी तो मुझे लगा कि मैं भी अपना कुछ शुरू कर सकती हूँ तो उसके बाद मैंने खेती करना शुरू किया सबसे पहले मैंने आलू की खेती की फिर टमाटर एवं बीन्स लगाया, और शुरूआत में मुझे इतनी जानकारी भी नहीं थी आलू लगाना भी नहीं आता था। जब आलू हुए तो खोदने में भी बहुत दिक्कत हुई क्योंकि मुझे आता नहीं था तो मैं कुदाल से आलू को तोड़ देती थी फिर एक साल ऐसे ही रहा और अच्छे से हर चीज सीखी फिर प्रॉपर तरीके से करने लग गई और सब्जी में हर सीजन की सब्जियां उगाती हूँ।

आजकल (नवम्बर-दिसम्बर) हमने मेथी, धनिया, पालक यह सब लगाया हुआ है अभी इसके बाद हम आलू की तैयारी करेंगे और इसकी मार्केटिंग हम हल्द्वानी मंडी में करते हैं और अभी मैंने पॉलीहाउस के लिए भी आवेदन किया है जो की बहुत जल्दी लग जाएगा।

आगे अनीता जी कहती हैं कि 2 साल से मैं मशरूम का कार्य भी कर रही हूँ और इसकी मैंने ट्रेनिंग ली हुई है जो कि मैंने RCP से और 10 दिन की ट्रेनिंग पंतनगर से ली हुई है और मैं बटन मशरूम उगा रही हूँ ।

बटन मशरूम को ही लोग पसंद करते हैं और मशरूम से हम पाउडर बनाते हैं जो ग्रेवी के लिए बहुत अच्छा होता है जो प्रोटीन व हेल्थ के लिए बहुत ही अच्छा होता है।

इसके अलावा मशरूम से अचार बना रहे हैं और पाउडर बना रहे हैं और ड्राई मशरूम भी हम बेचते हैं। और अभी मशरूम मैं छोटे से कमरे में कर रही हूँ जो की बेड / बैग माध्यम से करती हूँ।

अनीता जी बताती हैं कि सब्जी में एक सीजन से 50000 तक का हमारा नेट प्रॉफिट हो जाता है और मशरूम से 30000 तक का नेट प्रॉफिट होता है और मशरूम की हमारे क्षेत्र में मार्केटिंग बहुत कम है और मार्केटिंग करने में समस्या बहुत आती है एक तो वह जल्दी खराब हो जाते हैं, इसलिए हम मशरूम के बाय-प्रोडक्ट बनाने में ज्यादा प्रयोग करते हैं और अभी मैं मशरूम की एक ही फसल ले रही हूँ और इस बार मैंने सोचा है कि ओयस्टर का काम शुरू करूं और जो मशरूम मेडिसिन में काम आते हैं उन्हें मैं ट्राई करने का सोच रही हूँ और अभी मेरे पास जगह भी नहीं है और मैंने मशरूम यूनिट के लिए भी अप्लाई किया है लेकिन अभी आया नहीं है।

आगे अनीता जी बताती हैं कि इसके अलावा मैं मक्के के छिलके के टॉय / खिलौने बना रही हूँ और यह मैं 1 साल से कर रही हूँ।

मक्की के जो बाहर का छिलका होता है जिसे हम फेंक देते हैं उसे ही यूज करते हैं टॉय और फ्लावर बनाने में सबसे

पहले छिलके को सुखाया जाता है फिर सूखने के बाद उसको रख देते हैं, जब बनाना होता है उसे पानी में गीला कर देते हैं और यदि फ्लावर बनाने होते हैं तो कलरफुल पानी में डूबा कर हम फ्लावर बनाते हैं और उसे धागे से बांध देते हैं और यही दो सामग्री प्रयोग होती हैं।

इसमें और सामाग्री जैसे फेविकोल वगैरा लगाकर वह टूट से जाते हैं यह बड़ी सावधानी से बनाने पड़ते हैं, और इसके अलावा हमारे यहाँ बाबिला घास (विशेष प्रकार की पहाड़ी घास) होती है उसकी हम बास्केट, झाड़ू बना रहे हैं, बाबिला घास पतली और मजबूत होती है, उसकी हम यह सब वस्तुएँ बना रहे हैं और इन सब की मार्केटिंग में अपने आउटलेट में ही करती हूँ जिन्हें अधिकतर टूरिस्ट लोग खरीदते हैं और मेरा आउटलेट बोराकुंड में स्थित है जहाँ में पहाड़ी उत्पाद जैसे बड़ियाँ, अचार, जूस जो टोकरियाँ आदि विक्रय करते हैं |

ऐपण का भी मैं कार्य कर रही हूँ और ऐपण भी सेल करती हूँ और इसके अलावा मैं स्टॉल भी लगाती हूँ जहाँ भी मुझे मौका मिलता है वहाँ मैं अपना स्टॉल लगती हूँ।

और इन सब प्रोडक्ट से हमारा सालाना 40 से 50 हजार तक नेट प्रॉफिट हो जाता है।

हालांकि, अनीता जी का स्पष्ट कहना है कि फसल की उपज भले ही कम हो, जिस वजह से मुनाफा कम मिलता है। लेकिन आज के परिवेश में लोगों को शुद्ध सब्जी नहीं

मिल पाती है। जिससे कई तरह तरह की बीमारियां हो रही हैं ऐसे में उनकी सब्जी की शुद्ध पैदावार लोगों की सेहत की खातिर बहुत जरूरी है ताकि हर कोई निरोग रहें। अनीता जी का कहना है कि स्वास्थ्य के आगे उन्हें कम मुनाफा मंजूर है।

- **सब्जी उत्पादन से एक सीजन में नेट प्रॉफिट- 50 हजार तक हो जाता है।**
- **मशरूम से 30 हजार तक नेट प्रॉफिट**
- **आउटलेट में पहाड़ी प्रोडक्ट से सालाना 40 से 50 हजार तक**

भविष्य हेतु योजना :

अनीता जी बताती हैं कि मैं चाहती हूँ कि और भी महिलाएं हमारे साथ जुड़े और इस कार्य को करें, और बढ़-चढ़कर इसमें महिलाएं आगे आए और आत्मनिर्भर बन सकें क्योंकि महिलाएं जो कार्य करती हैं उन्हें उस कार्य का अच्छा पैसा नहीं मिल पाता है महिलाएं घर में ही बहुत काम करती हैं लेकिन उन कामों की कुछ भी उपलब्धि उन्हें नहीं मिलती है इसलिए मैं महिलाओं के लिए हर समय खड़ी रहती हूँ, मैं चाहती हूँ कि मैं महिलाओं के लिए कार्य करूं और अपने साथ इस कार्य में और भी महिलाओं को शामिल करूँ |

मुख्य समस्याएँ :

अनीता जी बताती हैं कि शुरू में तो बहुत समस्याएँ आयी हैं जैसे शुरू में मुझे काम से इधर-उधर जाना पड़ता था तो घर में भी बोलते थे कि ऐसा भी क्या काम है जहाँ इतनी दूर-दूर जाना पड़े और गांव वाले भी कहते थे सुनाते रहते थे लेकिन अब कोई कुछ नहीं कहता है क्योंकि अब अपना काम इतना अच्छा कर दिया है कि सब कुछ अच्छे से चल रहा है हां शुरू में समस्याएँ आती है लेकिन उन समस्याओं से निपटना भी आना चाहिए।

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9 Article ID: 10165

काले गेहूँ, सब्जी उत्पादन एवं सगंध पौधों की खेती

जय सिंह बिष्ट, गांव कामदा, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी

काले गेहूँ की खेती का चलन हाल के कुछ सालों से ही देश के कुछ चुनिंदा हिस्सों में शुरू हुआ है।

नेशनल एग्री फूड बायोटेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट नवी मोहाली को देश में काले गेहूँ को विकसित करने का श्रेय जाता है। नॉन जीएम फसल के तौर पर विकसित काले गेहूँ मैं एंथ्रोसाईनिन नामक एंटीऑक्सीडेंट तत्व काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसके साथ ही इसमें महत्वपूर्ण पोषक तत्वों के साथ ही फाइबर की प्रचुरता होने और कार्बोहाइड्रेट व ग्लूटेन की संतुलित मात्रा के चलते काले गेहूँ को आम गेहूँ की तुलना में स्वास्थ्य के लिए काफी गुणकारी माना जाता है। सामान्य गेहूँ से तिगुनी से भी अधिक कीमत बिकने वाले काले गेहूँ की बाजार में मांग दिनों दिन बढ़ती जा रही है काले गेहूँ से किसानों की आजीविका के अवसरों में वृद्धि की संभावना को देखते हुए उत्तरकाशी जिले में कृषि विभाग के माध्यम से काले गेहूँ की खेती शुरू करने की मुहिम चलाने का निश्चय किया गया है।

जिले के चिन्यालीसौड़ ब्लॉक कामदा गांव के प्रगतिशील किसान जय सिंह बिष्ट काले गेहूँ को उगाने का सफल प्रयोग कर चुके हैं। इस सफलता से जिले में काले गेहूँ की खेती की बेहतर संभावना दिखी तो प्रशासन ने इसे बढ़ावा देने के लिए जिले के डुंडा, नौगांव व भटवाड़ी के कुछ गांव में पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने की कवायद शुरू कर दी है।

हमारे एडिटर ने जब जय सिंह बिष्ट जी से बात की तो उन्होंने बताया कि मैं पहले होटल लाइन में था और मेरी माता जी ने कहा था कि बेटा जो मजा अपनी खेती किसानी में है वह नौकरी में भी नहीं है तो मैं नाबार्ड के साथ देहरादून में जुड़ा था तो वहाँ पर मुझे एक व्यक्ति मिला जो की बेंगलुरु से था तो उसने मुझे कहा कि मैं अपनी नौकरी छोड़कर खेती किसानी पर आया हूँ और आज मैं काश्तकारों को ट्रेनिंग दे रहा हूँ और मुझे इस कार्य से राहत मिलती है आनंद आता है तो मेरे दिमाग में भी कुछ ऐसा ही बैठा कि क्यों ना खेती किसानी की जाए फिर मैं 2003-04 में घर आया तो खेती किसानी हम पहले से ही करते ही थे लेकिन मैंने कुछ नया करने का सोचा फिर मैंने शुरूआत हिमसोना टमाटर से की और पहले मैंने ट्रेनिंग ली थी कि टमाटर कैसे लगता है फिर टमाटर बोया तो बहुत अच्छा प्रोडक्शन मिला लेकिन मुझे मार्केटिंग नहीं मिल पायी फिर मैं कृषि विभाग के माध्यम से इधर-उधर ट्रेनिंग में जाता रहा तो ऐसी ट्रेनिंग में एक बार दिल्ली चला गया वहाँ मैंने स्ट्रॉबेरी देखी तो वहाँ से मैंने

जानकारी हासिल की और हिमाचल से मैं 10 हजार पौध स्ट्राबेरी की लाया था।

जिसमें मेरा 5000 का खर्चा आया था और उसके बाद मैंने अपने घर के आस-पास स्ट्रॉबेरी के पौधे बो दिए मल्चिंग वगैरा की और उसमें भी मुझे अच्छा प्रोडक्शन हुआ और सेल भी अच्छी हुई और मार्केट भी मुझे घर पर ही मिल गयी थी

यदि उचित मार्गदर्शन के साथ स्ट्रॉबेरी की खेती की जाए और मौसम की मेहरबानी भी बनी रही तो इस फसल में प्रति एकड़ लाखों का मुनाफा कमाया जा सकता है।

लेकीन वह भी कुछ मुझे ठीक नहीं लगा क्योंकि स्ट्रॉबेरी को ज्यादा समय के लिए स्टोर नहीं कर सकते हैं।

उसके बाद में हर्बल की तरफ गया और मैंने रोजमेरी और डेडलियोन की खेती की जो डायबिटीज और शुगर के मरीजों के लिए बहुत अच्छी होती हैं और इसकी ग्रीन टी बहुत अच्छी होती है, और इसकी शुरुआत मैंने 2020 से की थी और उत्तरकाशी में विभाग ने मेरे माध्यम से लोगों को यह फ्री में दिया था।

और मैंने यह स्विजरलैंड से मंगवाया था फिर इसमें भी मैंने देखा यह भी अधिक अवधि की फसल थी जो 3 साल बाद तैयार होती है |

आगे बिष्ट जी बताते हैं कि उसके बाद में बेंगलुरु चला गया तो वहाँ मैंने देखा काला गेहूँ तो उनसे पूछा जानकारी ली तो उन्होंने बताया कि मुझे काले गेहूँ का बीज पंतनगर से मिल जाएगा। फिर उसके बाद कृषि विभाग के साथ में पंतनगर चला गया तो वहाँ से मैंने काला गेहूँ और काले धान का बीज लाया था और यह 2022 की बात है, फिर अपने यहाँ बोया कुछ छिड़काव विधि से और कुछ श्री विधि से और मैंने 3 kg बीज लगाया था जो कि मैंने तीन नाली भूमि में बोया था और इसका मुझे बहुत अच्छा रिजल्ट मिला जिसमें मुझे 2.5 कुंतल काले गेहूँ का उत्पादन हुआ और यह विभाग वालों ने ही मुझसे खरीदा ₹100 प्रति kg के हिसाब से और काश्तकारों को फ्री दे रहे हैं भटवाड़ी डुंडा और नौगांव इन तीन ब्लाकों में यह बीज बांटा गया।

और इसके अलावा मैंने काले धान भी पिछले साल बोया था जो कि मैंने 5kg लगाया था। जिसमें कि मुझे 4 क्विंटल तक उत्पादन हुआ थोड़ी जानकारी भी कम थी अगर मैं श्री विधि से बोता तो 6 से 7 कुंतल तक उत्पादन होता और यह भी विभाग ने ही मुझ से 120 रुपए kg के हिसाब से खरीदा।

और काले गेहूँ और काले धान का हमारे क्षेत्र में अन्य लोग भी कर रहे हैं इस तरफ उनका ध्यान बढ़ रहा है और अपने ही गांव में मैंने बहुत से किसानों को इसका बीज दिया है और इस बार हमारे यहाँ टनों में इसका उत्पादन होगा।

और फिर मैंने काले चने की खेती भी की और इसका प्रोडक्शन भी अच्छा हुआ और इसकी मार्केटिंग वैल्यू भी अच्छी है अभी हाल ही में देहरादून में अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव लगा था दून कॉलेज में तो वहाँ मैं इसे लेकर गया था तो वहाँ 350 रुपए kg काला धान और ₹350 kg काला चना बिका।

आगे बिष्ट जी बताते हैं कि वर्तमान समय में नर्सरी में भी काम कर रहा हूँ जिसमें मैंने अश्वगंधा के एक करोड़ पौधे तैयार किए हैं जो कि मैंने ट्रे में लगा रखे हैं जिसमें कंपोस्ट समय-समय में डालता रहता हूँ और वर्मी कंपोस्ट भी में खुद ही बनाता हूँ और पिछले साल मैंने केंचुए की खाद को पूरे चिन्यालीसौर ब्लॉक में दिया था और मेरे पास दो टैंक हैं। और जो मैं नर्सरी कर रहा हूँ इसमें मैंने बैंगन और टमाटर की क्रॉप लेनी है, और अश्वगंधा की जो नर्सरी है उसके जो डंठल होते हैं वह 5 साल के लिए होता हैं तो इसमें मैं टमाटर और बैंगन की कलम करूंगा और हमारे एक्सपर्ट हैं जिन्होंने यह सक्सेस कर रखा है बेंगलुरु में तो वही हमसे यह करवा रहे हैं। कितने काश्तकार और कितने लोगों को इसका बेनिफिट मिल सकता है उसको अभी नहीं बता पाऊंगा लेकिन मैं हमेशा नया करने की सोचता हूँ।

और इसके अलावा 2021 में नमामि गंगे के माध्यम से मुझे एक आउटलेट प्राप्त हुआ जो कि चिन्यालीसौड़ मार्केट में है जहाँ मैं अपने लोकल उत्पाद जैसे कोदा, जंगोरा, दालें, जूस जिसमें आँवले, बुरांश का जूस, आंवले का अचार, लहसुन का अचार, आम का अचार इन सबको तैयार करके अपने आउटलेट में बेचता हूँ।

और अपने इस आउटलेट से मैं सालाना 4 लाख तक कमा लेता हूँ।

और अभी विभाग ने मुझे एप्पल मिशन के तहत सेब के 250 पौधे दिए हैं जो मैंने अपने यहाँ लगाए हैं जिनकी ग्रोथ अच्छी हो रही है।

इसके अलावा जो RBI संगठन है उन्होंने अभी मुझे फैक्ट्री देने का प्लान बनाया है जिसमें की जूस, चिप्स, लोकल उत्पादन के प्रोडक्ट आदि की फैक्ट्री के लिए बोला है तो मैं जो भी कार्य करता हूँ संगठित होकर करता हूँ, लोगों को साथ में जोड़कर चलता हूँ कुछ मैं सिखता हूँ कुछ मुझे जानकारी है तो कुछ उनको जानकारी है और आज भी मैं सीख ही रहा हूँ, और RBI वालों ने मुझे हमेशा सपोर्ट किया है और उनके सपोर्ट से ही मैं यह सब कर पा रहा हूँ।

भविष्य हेतु योजना :

बिष्ट जी बताते हैं कि भविष्य में बहुत कुछ करना चाहता हूँ और मेरा मुख्य फोकस है कि मेरे क्षेत्र के लोग भटके ना अभी अश्वगंधा की नर्सरी में कर रहा हूँ यदि यह सक्सेस हो जाता है तो जो मेरे क्षेत्र के किसान हैं उन्हें मैं यही रोजगार दूंगा और जो आरबीआई वालों ने मेरे लिए फैक्ट्री का प्लान बनाया है। यदि वह भी अच्छे से संचालित हो गया तो मैं यहाँ के लोगों को हमारे बेरोजगार भाइयों को यही अपने यहाँ रोजगार दे सकता हूँ, लेकिन वही है कि सीधे रास्ते में कांटे बहुत मिलते हैं और मैंने अभी बहुत से लोगों को अपने साथ जोड़ा भी है जिसमें मैंने 120 संगठन बनाए हैं जिसमें की 100 से 200 किसान जुड़े हुए हैं जिससे यह लोग आगे अपना कार्य अच्छे से कर सकते हैं।

मुख्य समस्याएँ :

बिष्ट जी बताते हैं कि समस्याएँ तो बहुत आयी हैं और अभी भी हैं लेकिन मैंने कभी हिम्मत नहीं हारी शुरू में घर वालों ने भी गालियां दी लोगों ने भी बहुत कुछ सुनाया तो हर चीज देखी है, सुनी है, लोगों के ताने सुने हैं, लेकिन कभी हार नहीं मानी, शुरू में जानकारी का अभाव भी था, लोग कहते थे कि क्या कर रहा है इसमें कुछ नहीं होगा लेकिन मैंने किसी की परवाह नहीं की निरंतर अपना कार्य करता रहा और इन सब में मेरा साथ मेरी धर्मपत्नी ने दिया और हम दोनों ही मिलकर यह सब कर रहे हैं। और इसके अलावा हमारे यहाँ मुख्य समस्या जंगली जानवरों से है इसके लिए हमने विभाग से घेर-बाड़ के लिए भी आवेदन किया है|

https://pahadiagromagazine.in
The Pahadi Agriculture e-Magazine
ISSN: 2583-7869
Volume-1, Issue-9
Article ID: 10166

विरासत की कर रहे हैं हिफाजत

वैद्य रामकृष्ण पोखरियाल, ग्राम - पोखरी, पोस्ट- विसल्ड,
ब्लॉक पाबौ, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, 246164

उत्तराखण्ड़ के पौड़ी जिले के पाबौ ब्लॉक का छोटा सा गांव पोखरी आज पलायन की मार से बुरी तरह त्रस्त है। बावजूद इसके कि गांव की दस हेक्टेयर भूमि में लहलहा रही जड़ी-बूटियों और बारानाजा (बारह प्रकार के अनाज) की फसल एक परिवार के पुरुषार्थ की कहानी बयां कर रही है।

यह संभव हो पाया दो दशक तक मुंबई में जीने की राह तलाशते रहे 55 वर्षीय रामकृष्ण पोखरियाल की घर वापसी से। उन्होंने हाड़तोड़ मेहनत कर गांव को सरसब्ज ही नहीं बनाया, अन्य लोगों को स्वरोजगार व स्वावलंबन के साथ पर्यावरण संरक्षण की भी सीख दे रहे हैं।

खानदानी वैद्यकीय परंपरा को चौथी पीढ़ी में भी जीवित रखे हुए रामकृष्ण ने गांव की बंजर भूमि को हरा-भरा करने की ठानी तो पलभर में मुंबई से दो दशक का नाता तोड़ सीधे गांव की राह पकड़ ली। शिक्षक पिता वैद्य राजाराम पोखरियाल के सानिध्य में पारंपरिक जड़ी-बूटियों के नुस्खे सीखे और जुट गए हरियाली की बयार लौटाने में। पहले स्वयं की जमीन को सींच वहाँ पौधे रोपे और धीरे-धीरे खेतों को सरसब्ज करने का यह दायरा कुटुंब की दस हेक्टेयर भूमि तक फैल गया। रामकृष्ण जी बताते है कि ऐसा कोई रोग नहीं जिसका इलाज आयुर्वेद में ना हो हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड मैं तो औषधीयों का भंडार है लेकिन एक और जहाँ विदेश में आयुर्वेदिक दवाओं जड़ी बूटियों की मांग बढ़ रही है। अपने देश में लोग हानिकारक अंग्रेजी दवाओं के पीछे भाग रहे हैं इसकी बड़ी वजह वैद्य को सरकारी प्रोत्साहन न मिलना भी है। लुप्त होती वैद्यकीय परंपरा और जड़ी बूटियों की विरासत संभाल रहे वैद्य रामकृष्ण पोखरियाल इन शब्दों में भविष्य की चिंता जताते हैं।

पोखरियाल जी पौड़ी गढ़वाल के पोखरी गांव निवासी हैं और यह उत्तराखंड में ही नहीं पूरे भारत देश में प्रदर्शनियों में जाते रहते हैं जहाँ पर यह अपनी जड़ी बूटी दवाओं को बेचते भी हैं और लोगों का इलाज भी करते हैं। रामकृष्ण जी ने बताया कि उनके परिवार में चार पीढ़ियों से वैद्य की परंपरा चली आ रही है और बताया कि वह गांव में अपनी दस हेक्टर भूमि पर 40 प्रकार की जड़ी बूटीयां उगाते हैं।

इस काम के जरिए उन्होंने गांव की महिलाओं को रोजगार से जोड़ा है।

मुख्य व्यवसाय- *42 बर्षो से जड़ीबूटीयों द्वारा अस्वस्थ लोगों की सेवा करना तथा बागवानी और 30 गाय के साथ गौशाला का संचालन*

गढ़वाल विश्वविद्यालय और पंतनगर विश्वविद्यालय और दून स्कूल में कई बार प्रस्तुतीकरण दे चुके हैं, वैध रामकृष्ण जी बताते हैं कि मेडिकल से संबंधित तमाम विश्वविद्यालय और स्कूल के बच्चे उनसे जड़ी बूटियों की जानकारी लेने आते हैं।

पोखरियाल का कहना है कि अंग्रेजी दवाएं रोग को तुरंत दबा देती हैं लेकिन आगे चलकर शरीर को नुकसान पहुंचती हैं लेकिन जड़ी बूटियां के माध्यम से रोग को जड़ से समाप्त किया जाता है इनकी मदद से हर बीमारी का

इलाज संभव है वह चिंता जताते हैं कि अगर प्रदेश सरकार से वैधक परंपरा को मदद नहीं दी गयी तो कुछेक वैधौ तक सिमट चुकी जड़ियों की विरासत समाप्त हो जायेगी।

राम कृष्ण जी का दावा है कि आयुर्वेदिक जड़ियों की मदद से वह निम्न बीमारियों का इलाज स्वनिर्मित औषधियों द्वारा किया जा सकता है |

निसंतान, पथरी, कैन्सर,स्त्री-पुरुष गुप्त रोग, श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर, लाईपोमा, पौरुष ग्रंथि, शुक्राणु की कमी, समस्त वात रोग, सोराईसिस, सफेद दाग, खरांटे, शूगर, थाइरॉइड, एलर्जी, दंत रोग, बवासीर, साइटिका, वातप्रसूत, मुहांसे, चर्मरोग, आमवात, कब्ज, तनाव, स्तनकेंसर, नासुर, सिस्ट, कर्णरोग, दमा, सिरदर्द, वजन घटाना, वजन बढ़ाना,सिर में बाल उगाना,बच्चों के समस्त रोग, आदि |

जड़ीबूटीयों की खेती- गिलोय, तेजपत्ता, कचनार, निर्गुंडी, आर्टीमीसिया 3 प्रकार के, दारूहल्दी, हल्दी, वज्रदंती, एलोवेरा, सदाबहार, मंडूकपर्णी, पत्थर चूर, पाषाण भेद, पर्णबीज, वच, सफेद मूसली, ममेरी, वन अजवायन, अंजीर, देवदार, सुराई, काफल, बुरांश, तगर, वकायन, आकं, वाराही कंद, शतावर, अश्वगंधा, लेमनग्रास, रामा तुलसी, कृष्ण तुलसी, लेमन तुलसी, बद्री तुलसी, वन तुलसी, अदरक, लहसुन, वन प्याज, ऋषभक, जीभक, खस, इन्द्रायण लाल, इन्द्रायण सफेद, लोध्रा, टिमरु, आंवला, जामुन, कपूर कचरी, कूठ, रीठा, कासनी, बड़ी इलाइची, अपराजिता, भू आंवला, बड़ी दूधी, बिच्छू घास, पितपापड़ा, मोथा, कीवी, कनेर लाल, कनेर सफेद, मजिष्ठा, घिंघारु, सिंहपर्णी, आदि|

और मैं पेशेंट की नब्स को देखकर जीभ को देखकर उनका इलाज करता हूँ और दवाई देता हूँ और मैं कैंसर तक ठीक कर सकता हूँ।

और बागवानी में मैंने विगत 20 सालों में 10 हैक्टेयर बंजर खेती में 1800 रुट स्टाक सेब के पौधे, 220 कीवी के पौधे, 50 स्टोन फ्रूट के पेड, 2000 तेजपत्ता, और 100 अखरोट, 100 रीठा, 200 ग्वीराल,5 0000 लेमनग्रास के पौधे तथा, 50 लोध्रा, 3000 तगर, अश्वगंधा, शहतूत, 6 प्रकार की तुलसी, तथा 100 विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटी लगा रखी हैं|

मेरे हर्बल महा गार्डन को देखने के लिए प्रतिवर्ष विभिन्न इन्सट्यूट से MPhrma, Bphrma, Dphrma, M. Sc, Ph.D., MSW के विद्यार्थी और NGOs के लोग तथा विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारी देखने के लिए आते हैं |

पिछले व एम. फार्मा के 8 बच्चों का प्रैक्टीकल मेरे यहाँ हुआ उन्होंने 25 प्रकार की जड़ी बूटी अपनी प्रैक्टीकल फाइल में लगायी मैं गांव की 6 से 8 महिलाओं को साल में150 दिन का रोजगार देता हूँ |

पिछले साल मार्च में पौड़ी के अपर आयुक्त व CDO भी मेरे यहाँ जड़ी बूटी देखने आये थे मेरे यहाँ सिंचाई रेन वाटर् हार्वेस्टिंग से निर्मित 4 लाख लीटर के तालाब से होती है,

और इसके अलावा 10 प्रकार की हर्बल चाय का भी उत्पादन करता हूँ। और बनाता हूँ जो की लिक्विड फोम में है।

इसी के साथ ही बद्री नस्ल की 30 गायों जो कि लावारिस हैं उनके साथ गैशाला का संचालन भी कर रहा हूँ |

जो लोग जानवरों को छोड़ देते हैं या जंगलों में बांध देते हैं और वह हम लेकर आते हैं जिनके लिए हमने गौशालाएं बना रखी हैं |

और गौशाला की देखरेख के लिए मेने बहादुर (नेपाली) रखे हैं और बगीचे की भी देख रेख़ यही करते हैं। जिनको मैंने परमानेंट रखा हुआ है और मैं उन्हें महीने की 15000 रुपए तनख्वाह देता हूँ और गायो में कुछ गाय दुधारू हैं जो कि सितंबर माह में ब्याईं और कोई गाय दूध नहीं निकालने देती हैं। क्योंकि जो गांव की गाय होती हैं वह सिर्फ महिलाओं को ही अपने पास दूध निकालने के लिए मानती हैं, पुरुष को दूध निकालने नहीं देती हैं लात मारती हैं, सिंग मारती हैं और यहाँ लोकल में कोई दूध निकालने को तैयार नहीं है |

आगे रामकृष्ण जी बतते हैं कि यहाँ गांव में मजदूर नहीं मिल पाते हैं मैं लोगों को रोजगार देना चाहता हूँ लेकिन कोई काम करने को तैयार नहीं है और गौशाला के लिए भी मुझे मजदूर चाहिए लेकिन यहाँ के लोग बोलते हैं कि हम गोबर नहीं निकलेंगे तो वही एक बड़ी समस्या है और इसके अलावा मेरे पास दीए बनाने की मशीन है, मूर्तियां बनाने की डाइयां हैं, और उपले बनाने की मशीन है जो मैंने 40000 की ली थी। और मूर्तियों में जितनी भी मूर्तियां दीपावली में बनती हैं गोबर का जितना भी प्रयोग होता है वह मेरे पास सभी मशीन है लेकिन कोई भी काम करने को तैयार नहीं है और सैंपल मैंने खुद बनाए हैं लेकिन लोग बोलते हैं कि हम गोबर में हाथ नहीं डालेंगे, लेबर मिलती नहीं है अपने आप काम करना पड़ता है और सीजन में कोई मिलता नहीं है और मैं 50 आदमियों को रोजगार दे सकता हूँ लेकिन कोई करने को तैयार नहीं है।

और जड़ी बुटियों में पत्ते वाली जड़ी बूटी के लिए मेरे पास कटिंग करने के लिए कटर रखा हुआ है जो चारे काटने की मशीन जैसे छोटी मशीन है और डिस्टिलेशन मशीन है ग्राइंडर है जो पाउडर बनाता है जो पूरी लकड़ी तने को पीस सकता है और मैं हवन सामग्री बना सकता हूँ जिसमें टोटल जड़ी बूटियां लगती हैं इसके अलावा धूप बना सकता हूँ व उपले भी जो जड़ी बूटी के बन जाएंगे इसके अलावा जड़ी बूटी से संबंधित और गोबर से संबंधित जितने भी पदार्थ है वह मैं बना सकता हूँ|

मूर्तियों और दीए में 60% गोबर होता है 40% मिट्टी छान के डालते हैं और यह काम भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि करने वाले नहीं है यहाँ के लोग बोलते हैं है कि हम गोबर में हाथ डालेंगे नहीं जब गोबर में हाथ डालेंगे नहीं तो काम कहां से होगा और होटल लाइन के जितने भी लड़के काम करते हैं जो बर्तन धोने का काम करते हैं उनके हाथों के छिलके निकल रहे हैं तो वह मेरे पास आते हैं दवाई लेने चाहे वह यहाँ हो या कहीं बाहर देश में भी काम कर रहे हैं वह मुझे फोन करते हैं कि हाथ खराब हो रहे हैं अब दिन भर बर्तन धुल रहे हैं तो हाथ तो खराब होने ही हैं |

आगे रामकृष्ण जी बताते हैं कि ऑल इंडिया में प्रदर्शनी में जाता रहता हूँ और अक्टूबर 24 को मैं बेंगलुरु जाना है और बेंगलुरु का मेरा यह तीसरा ट्रिप है और मैं लास्ट ईयर भी गया था |

इसके अलावा ऑल वर्ल्ड के भी कार्यक्रम होते हैं पूरे 190 देश के वैद्य आते हैं हर चौथे साल कार्यक्रम होता है 2012 में हैदराबाद में था, 2016 में बेंगलुरु में था, 2020 में अहमदाबाद में था और मैं वहाँ सैंपल ले जाता हूँ दिखाने के लिए 10-10 बोतल प्रत्येक वैरायटी के उससे प्रचार हो जाता है लोग लेकर भी जाते हैं और मैं अपने प्रोडक्ट को अमेजॉन के माध्यम से भी सेल करता हूँ और मुझे कुछ सामान लेना हो तो मैं भी अमेजॉन से सामान लेता हूँ जिसमें बगीचे का जितना भी सामान लगता है वह मैं वहीं से ही मंगवाता हूँ।

और में जो धूप बनाता हूँ उसमें जड़ी बूटी और गोबर तथा गोमूत्र मिक्स करके बनाता हूँ और मेरे पास सात प्रकार की धूप हैं जिनकी अलग-अलग खुशबू है।

इसके अलावा जो मलेरिया की दवा बनती है आर्टिफिशिया एनोवा है उसका बीज खरीदता है इफका कंपनी जो अफ्रीकन देशों के लिए मलेरिया का इंजेक्शन बनाती है और आज के समय सबसे ज्यादा मलेरिया है नाइजीरिया, युगांडा, केन्या जो साउथ अफ्रीका वाले देश है वहाँ मलेरिया सबसे ज्यादा है तो इफका कंपनी आर्टिफिशिया एनोवा का बीज खरीदती है और वह बीज की कीमत है ग्रेडिंग के हिसाब से तेल की मात्रा कितनी है तो मिनिमम 40000 और मैक्सिमम ₹100000 प्रति किलो का बीज है और बंजर भूमि में वह बीज छिड़क दो तो पौध तैयार हो जाता है। और उस पौधे का हर भाग काम आता है उसमें खुशबू इतनी ज्यादा है जब वह मलेरिया को ठीक कर रहा है बुखार को ठीक कर रहा है तो उसका जो वेस्ट भी होता है पत्ते, तना उन्हें धूप में डाल दिया तो कमरे में कितनी खुशबू आएगी और कीटाणु भी मर जाएंगे।

आगे रामकृष्ण जी बताते हैं कि जड़ी बूटियां के माध्यम से मेरा साल में 5 से 6 लाख तक का

टर्नओवर हो जाता है जिसमें मेरा 30% नेट प्रॉफिट हो जाता है और बागवानी एवं अन्य कार्य जो मैं कर रहा हूँ उनसे अभी कोई प्रोडक्शन नहीं है |

भविष्य हेतु योजना :

राम कृष्ण जी बताते हैं कि यहाँ इस क्षेत्र में बहुत कुछ करना चाहता हूँ लेकिन कोई काम करने को यहाँ तैयार नहीं है लेकिन मैं विगत 3 वर्षों से बागवानी कर रहा हूँ तो जब इन सब में प्रोडक्शन आ जाएगा तो भविष्य में मेरा प्लान है कि मैं फ्रूट प्रोसेसिंग का काम शुरू कर दूंगा और इसी के साथ मेरा हर्बल टी का कार्य भी हो रहा है तो उसमें भी आगे बहुत कुछ करना है हर्बल टी में 10 प्रकार की हर्बल टी बना रहा हूँ जिसके लिए मेरे पास डिस्टीलेशन मशीन है और यह मैं लिक्विड फोम में बनाता हूँ।

उपलब्धियाँ-

2023 में (हे न ब केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल) हैप्रिक द्वारा पुरस्कार

2020 में सरस मेले में प्रथम पुरस्कार

2019 में कलश कलाश्री सम्मान दिल्ली

2017 में औषधीय वनस्पति मित्र पुरस्कार

2009 में किसान भूषण पुरस्कार

2008 में सरस मेले में प्रथम पुरस्कार

2007 में हर्बल एक्सपो में तृतीय पुरस्कार

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9 **Article ID: 10167**

औषधीय पौधों को उगाकर बना रहे हैं एक अलग पहचान

संजय मेहरा, गाँव भंगोटा, ब्लॉक नारायणबगड़, जिला चमोली

औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती के लिए उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र बहुत ही अनुकूल है, प्रकृतिक तौर पर भी बहुत सी जड़ी बूटियाँ पर्वतीय क्षेत्रों में उगती हैं | आज के समय में आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों की माँग बढ़ने से किसानों का रुझान भी इनकी व्यावसायिक खेती की और बढ़ा है | आज हम ऐसे ही एक युवा किसान की बात कर रहे हैं, जिनका नाम है संजय मेहरा |

संजय जी बताते हैं कि 2017 से मैंने खेती-बाड़ी शुरू की है, CAP सेंटर देहरादून की राय से मैंने पौधे लगवाए थे जिसमें मैंने 800 पौधे तेज पत्ते के लगाए थे और कुछ पौधे भेशज से लिए तथा कुछ पौधे जड़ी बूटी शोध संस्थान चमोली से लिए थे, फिर वहाँ से कुछ योजना आई थी पेड़ लगाने पर जिसमें 30000 रुपए मिलने थे तो उसमें भी मैंने काम किया था। संजय जी बताते हैं कि अभी वर्तमान समय में भी जॉब कर रहा हूँ, मैं एक डिप्लोमा इंजीनियर हूँ और ऋषिकेश में जॉब कर रहा हूँ, शुरुआत में मैंने 800 पौधे तेज पत्ते के लगाए थे फिर उसके बाद भेसज से मिला उनसे संपर्क किया तो

वहाँ पर मुझे बताया गया और मेरे पास जमीन काफी है गांव में लगभग 2 हेक्टेयर जमीन है और गांव में बंजर खेत भी बहुत हैं तो मैंने उसे विकसित करने का सोचा फिर भेशज वालों से मिला तो उन्होंने जड़ी बूटी के बारे में और बताया और मैंने लगाना शुरू कर दिया जैसे पाषाण भेद

सतावर, वन हल्दी हो गई और जहाँ मैं यह सब कर रहा हूँ वहाँ कुछ नेचुरल प्लांट भी हैं जैसे बाँज, बुरांश, टिमरू और यह सब गांव से हटके 500 मीटर की दूरी पर हैं जहाँ मैंने यह सब एक गार्डन की तरह बना रखा है।

जहाँ दादी और पिताजी रहते हैं देखरेख करते हैं और यह गार्डन लगभग 1.62 हेक्टेयर के क्षेत्र में फेला है जहाँ हम यह सब कर रहे हैं और अभी तक में किसी की भी मार्केटिंग नहीं कर रहा हूँ क्योंकि अभी मार्केटिंग का पता भी नहीं चल पा रहा है और मैं जॉब भी कर रहा हूँ तो अभी तक मैंने किसी से भी प्रोडक्शन नहीं लिया है और यह सब मैने लंबे समय के लिए सोचा है।

तेज पत्ते के जब पौधे छोटे रहते हैं तो 4 साल तक इन्हें खाद व निराई गुड़ाई की जरूरत होती है उसके बाद खुद ही पौधे विकास करने लगते हैं और ऐसे ही पाषाण भेद का है शुरू में पानी और गोबर की आवश्यकता होती है फिर खुद ही विकास होती रहती है, और यह पथरी में उपयोग होता है और यह एक आयुर्वेद मेडिसिन है और यह चट्टान पर होता है और मैंने चट्टानों से ही इकट्ठा करके फिर खेतों में लगाया है गोबर डाली तो इसकी दोगुनी ग्रोथ हो गई इसके भी 250 पौधे लगाए हुए हैं इसके अलावा वन हल्दी भी लगाई हुई है जिसमें की चार से पांच खेत लगाए हैं।

इसके अलावा बुरांश, बांज, टिमरू, काफल भी उस क्षेत्र में है तो उनकी मेंटेनेंस व देख रेख भी हम लोग करते हैं।

यह सब मैं वहाँ कर रहा हूँ जहाँ बंजर जमीन थी इसके अलावा अपने घर के आस-पास में बागवानी भी कर रहा हूँ, जिसमें आड़ू, पुलम, अखरोट, संतरे, कीवी, इलायची एवं केले के पौधे लगाये हैं, और यह सब दादा जी के समय से ही हम लोग कर रहे हैं इसमें सिर्फ कीवी, बड़ी इलायची एवं वन हल्दी मैंने 2017 से शुरू किया था और अभी तक इन सब की हम लोग सेलआउट नहीं करते हैं बस अपने प्रयोग के लिए ही करते हैं।

आगे संजय जी बताते हैं इसके अलावा हमने समूह भी बना रखा है जो कि जड़ी बूटी के क्षेत्र में ही कार्य कर रहा है जिसका नाम लव कुश महादेव स्वयं स्वायत समूह है जिसकी अध्यक्ष मेरी माता जी हैं और इसमें हम पेड़ पौधे लगाते रहते हैं और जिसको मेडिसिनल प्लांट की जरूरत होती है या इसकी खेती करना चाहते हैं तो उन्हें पौधे की उपलब्धता हम करवाते हैं और इस समूह में अभी 5 मेंबर हैं और मेडिसिनल प्लांट की मार्केटिंग के लिए मैंने इंडियामार्ट पर भी अपनी आईडी बना रखी है।

आगे संजय जी बताते हैं की जड़ी बूटी संस्थान की तरफ से हमें ₹30 हजार की सहायता हुई थी तेज पत्ते की खेती और उसकी देख-रेख के लिए और वन विभाग से भी 25 से 30 हजार हमें मिले थे। और उद्यान विभाग से घेर-बाढ़ की सुविधा प्राप्त हुई थी जिसमें उद्यान विभाग ने 50 हजार की मदद की थी।

वैसे भी हमारी जमीन खाली ही पड़ी हुयी थी और पहाड़ों में विकास करने के लिए ऐसा कुछ तो है नहीं तो मुझे लगा की जड़ी बूटी का स्कोप बहुत अच्छा है मुझे भविष्य के लिए अच्छा लगा तो मैंने यह सब शुरू किया है।

इसके अलावा हमने चाय पत्ती के भी 36 पौधे लगाए हुए हैं जो कि काफी बड़े हो गए हैं अभी क्राफ्टिंग नहीं की है थोड़े मोटे तने हो जाएंगे तो उनकी क्राफ्टिंग करके आसानी से उसमें टहनियां आ जाएगी और कागजी नींबू को हम मार्केट में बेचते हैं जिसके 12 पौधे लगाए हुए हैं आड़ू के 9 पौधे हैं पूलम के 6 अखरोट के 5 संतरे के 9 पौधे लगाए हुए हैं और 6 पौधे कीवी के हैं इसके अलावा बड़ी इलायची के भी 150 पौधे लगाए हुए हैं और आम के 4

पौधे हैं और यह बहुत पहले के लगे हुए जिसमें बम्बई आम है जिसमें लगभग 1 किलो तक का भी आम लगता है।

भविष्य हेतु योजना :

संजय जी बताते हैं कि जहाँ गार्डन है वह सड़क से बहुत दूर है तो वहाँ तक सड़क ले जानी है। और विकसित करना है, और आगे आयुर्वेदिक क्षेत्र में ही काम करना है और भविष्य में आयुर्वेद का स्कोप बहुत अच्छा है क्योंकि आदमीयों ने दवाई खा-खा कर परेशान हो जाना है और जिस हिसाब से जनसंख्या बढ़ रही है तो हर इंसान दवाईयों से कुछ समय के लिए सही होता है परंतु लंबे समय के लिए ठीक नहीं होता और आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से बीमारियों को ठीक करता है तो भविष्य में मेरा यही प्लान है कि और भी आयुर्वेदिक पौधे लगाऊँ।

मुख्य समस्याएँ :

संजय जी बताते हैं शुरू में तो काफी समस्याएँ हुई हैं, पौधे लगाने के लिए खुद ही लगना पड़ा सारे फैमिली मेंबर खुद ही पौधे लगाते थे, और शुरू में जानकारी भी नहीं थी और जहाँ से जानकारी मिलती रही मैं लेता गया फिर धीरे-धीरे जब जानकारी होती गयी तो उसमें हम करते गए और अब वर्तमान समय में सब अच्छा हो रहा है।

https://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-9

Article ID: 10168

पशुपालन आधारित आजीविका से स्मृद्धि की राह पर

देवेंद्र सिंह नयाल, गांव नाई, ब्लॉक ताकुला, जिला अल्मोड़ा

भारत में पशुपालन का अत्यधिक महत्व है। भारत के किसान खेती करने के साथ-साथ पशु पालन भी करते हैं जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।

पशुपालन कृषि विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत पालतू पशुओं के विभिन्न पक्षों जैसे भोजन, स्वास्थ्य, प्रबंधन एवं आवास आदि का अध्ययन किया जाता है |

पशुओं से हमें गोबर की खाद प्राप्त होती है जिसका उपयोग करके हम भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ा सकते हैं। भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ने के कारण हमें उपज भी अच्छी प्राप्त होती है। इसके साथ ही पशुओं के गोबर से गोबर गैस, तथा ईंधन हेतु गोबर के कंडे (उपले) आदि प्राप्त होते हैं।

पशु-पालन के अंतर्गत दुग्ध व्यवसाय से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान होता है। इससे बहुत से लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो जाता है।

इसलिए पशुपालन का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। इसके अलावा पशुओं का कृषि के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान है। और ऐसे ही मधुमक्खी पालन एक ऐसा ही व्यवसाय है जो मानव जाति को लाभान्वित कर रहा है, यह एक कम खर्चीला घरेलु उद्योग है जिसमें आय, रोजगार व वातावरण शुद्ध रखने की क्षमता है यह एक ऐसा रोजगार है जिसे समाज के हर वर्ग के लोग अपना कर लाभान्वित हो सकते हैं। मधुमक्खी पालन कृषि व बागवानी उत्पादन बढ़ाने की क्षमता भी रखता है। मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटों वर्ग की जंगली जीव हैं इन्हें उनकी आदतों के अनुकूल कृत्रिम ग्रह में पालकर उनकी वृधि करने तथा शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है | नयाल जी बताते हैं कि मैं पहले गीतांजलि ग्रुप में जॉब करता था जो की डायमंड ज्वेलरी का काम है, और मैं पूरा नॉर्थ एरिया हैंडल करता था बतौर सेल्स मैनेजर फिर कंपनी में घोटाला हुआ और जॉब छूट गयी, फिर मैं लॉकडाउन के समय घर आ गया था और घर में खेती-बाड़ी का काम हम पहले से ही करते थे। फिर उसके बाद

सबसे पहले मैंने पशुपालन की शुरुआत की 2021 से जिसमें मेरे पास घर में दो गाय थी और मैं हॉलस्टिन, जर्सी एवं साहिवाल गाय लेकर आया, जिससे वर्तमान में मेरे पास चार गाय हैं होलिस्टीन, साहिवाल, जर्सी और एक बछिया है।

और उनके लिए हमारे पैतृक गौशालाएं बनी हुयी हैं जहाँ हम इनकी देखरेख करते हैं और इनके चारे के लिए हम दिन में इन्हें चराने के लिए जंगल ले जाते हैं| और इसके अलावा बाहर से दाना मंगवाते हैं जैसे कपिला पशु आहार, चोकर, मिनरल्स, कैल्शियम आदि मंगवाते हैं, और कैल्सियम इनके लिए बहुत जरूरी हो जाता है क्योंकि देसी प्रजाति हैं तो कैल्शियम और मिनरल्स दूध उत्पादन के लिए बहुत जरूरी होता है जो हम समय-समय पर इन्हें देते हैं।

और इसके अलावा कुछ बीमारी आदि इन्हें होती हैं तो हम तुरंत इनका इलाज करवाते हैं जो कि हमारे नजदीक में ही पशु चिकित्सक हैं उन्हें समय-समय पर बुलाते हैं और यह दूध भी देती हैं जिसमें होलिस्टन गाय प्रतिदिन 14 लीटर दूध देती है, साहिवाल प्रतिदिन 10 लीटर और जर्सी 5 लीटर दूध प्रतिदिन देती हैं।

और दूध में अपने गांव और आसपास के क्षेत्र में ही विक्रय करता हूँ क्योंकि मार्केट हमारे यहाँ से दूर पड़ता है जो कि 45 किलोमीटर जाना पड़ता है, जिसमें पूरा दिन लग जाता है और दूध जितना होता है वह बेच देते हैं जो बचता है उसका घी एवं दही वगैरा भी बनाते हैं और **मेरा पशुपालन से प्रति माह 15 से 20 हजार तक नेट प्रॉफिट हो जाता है।**

आगे नयाल जी बताते हैं कि मैं बकरी पालन भी कर रहा हूँ जिसकी शुरुआत मैंने 2021 से की थी| इसमें मैं सबसे पहले एक बकरी लाया था जो कि अपने पहाड़ी नस्ल की थी फिर उसके दो बच्चे हुए फिर उसके बाद दो और बकरियां ले आया था तो ऐसे ही करके वर्तमान समय में मेरे पास आठ बकरियां हैं, और उनके चारे में जो गाय के लिए करता हूँ तो थोड़ा बहुत इन्हें भी दे देता हूँ, और जो घर का गेहूँ एवं चना वगैरा होता है इन्हें चारे के रूप में देता हूँ और उनका विक्रय भी मैं आसपास के क्षेत्र में ही करता हूँ और इसमें हम आमदनी के लिए निर्भर नहीं रह सकते हैं जब सीजन होता है या पूजा पाठ के लिए लोग ले जाते हैं तो उस समय अच्छे रेट में हम इनको विक्रय कर देते हैं।

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में बड़े पशुओं का पालन कठिन है क्योंकि उनके पालन के लिए अधिक जगह की आवश्यकता होती है किंतु एक गाय और भैंस की जगह चार या उससे ज्यादा बकरियां पाली जा सकती हैं| बकरी सभी प्रकार के पौधे का उपभोग करती हैं जो आमतौर पर अन्य जानवरों द्वारा सेवन नहीं किया जाता है इसके अतिरिक्त कांटे वाले पौधे को भी बकरियां खा लेती हैं, पत्तियां चरने की इस प्रवृत्ति के कारण बकरियो में कभी फास्फोरस की कमी नहीं होती है बकरियों में कच्चे फाइबर को पचाने की क्षमता अधिक होती है। इसलिए कम गुणवत्ता वाले चारे पर पाला जा सकता है।

और बकरी एक बहुउद्देशीय पालतू जानवर है। क्योंकि इससे अच्छी गुणवत्ता वाली खाद अच्छी मात्रा में मांस और दूध मिलता है, हालांकि कुछ नस्ल की बकरियां अच्छे चमड़ा उत्पादन के लिए भी जानी जाती हैं।

इसके अलावा नयाल जी बताते हैं कि मैं मधुमक्खी पालन भी करता हूँ जो कि मैंने 2021 से शुरू किया और शुरुआत मैंने दो बॉक्स से की थी जो कि मैंने यहीं पास के गांव से ही खरीदे थे जिसमें मुझे एक बॉक्स 1500 का पडा था और दो बॉक्स 3000 में मुझे मधुमक्खी सहित पड़े थे, जिसमें हम इंडिका प्रजाति की मधुमक्खी का पालन कर रहे हैं और यह मैंने अपने घर में छतो में रखे हैं| वर्तमान समय में मेरे पास 24 बॉक्स हैं और हम साल में दो बार शहद निकलते हैं जो की अक्टूबर-नवंबर में और दूसरा अप्रैल और मई के महीने में शहद निकलते हैं। और मधुमक्खी से एक सीजन में 50 से 60 kg तक शहद उत्पादन हो जाता है और जो इंडिका प्रजाति है इन्हें बरसात में फीडिंग / कृत्रिम खाने की आवश्यकता होती है अगर नहीं करवाएंगे तो यह विकास नहीं कर पाती हैं ।

इसके अलावा नयाल जी बताते हैं कि मधुमक्खी (मौन) पालन पर्यावरण के अनुकूल एक कृषि-वानिकी आधारित व्यवसाय है। मधुमक्खियों की ओर से पुष्पों से रस एकत्र करके तैयार किया जाने वाला शहद हानिरहित पूर्ण भोजन और पौष्टिक तत्व प्रदान करने वाला खाद्य पदार्थ है। मौन पालन को कम लागत में आसानी से शुरू किया जा सकता है जिसके लिए अधिक समय, श्रम व किसी विशेष प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती। पर्वतीय क्षेत्रों में मौन पालन आय का बेहतरीन जरिया बन सकता है।

और शहद को मैं 1 kg की बोतल हजार रुपए की बेचता हूँ, अगर इसकी मार्केटिंग भी अच्छी हुई तो इससे भी मैं एक सीजन में 50 से 60 हजार तक कमा लेता हूँ।

इसके अलावा में सब्जी उत्पादन भी करता हूँ और यह हम सीजनली करते हैं और सब्जी उत्पादन हम पहले भी करते थे लेकिन 2021 कोरोना काल के बाद मैंने इसे थोड़ा बड़े पैमाने में करना शुरू किया है| और सब्जी हम केवल प्याज, लहसुन, टमाटर आदि विक्रय हेतु उगाते हैं, बाकी हम अपने खाने के लिए ही उगाते हैं।

हम मोटे अनाज की खेती भी करते हैं जिसमें हम मंडवा, गेहूँ, धान, झंगोरा और दालें यह सब उगाते हैं, जो सिर्फ अपने खाने के लिए ही करते हैं।

भविष्य हेतु योजना :

नयाल जी बताते हैं कि आगे भविष्य मैं मेने एप्पल मिशन के तहत सेब का बागान लगाने का सोचा है जिसमें रेड गाला और डिलीशियस प्रजाति के सेब लगाऊंगा इसके अलावा मधुमक्खी में मेरा ज्यादा फोकस है क्योंकि इसमें मुझे अच्छा मुनाफा लगा तो मैं इसे और बड़े पैमाने पर करूंगा| इसके अलावा में अपने क्षेत्र में डेरी खोलने की सोच रहा हूँ जिस पर मैं अभी काम कर रहा हूँ इसके अलावा अगर हमें मार्केटिंग की अच्छी सुविधा होती है तो मैं सब्जी उत्पादन को भी बड़े पैमाने पर करूंगा।

मुख्य समस्याएँ :

नयाल जी बताते हैं कि नया काम अगर आप कोई भी कर रहे हैं तो उसमें समस्याएँ तो आती ही हैं लेकिन उससे क्या होता है कि हमें एक अनुभव भी मिलता है जितना हम करेंगे उतनी हमें जानकारी होती रहेगी | और एक होता है प्रैक्टिकल करना और एक होता है थ्योरी करना तो थ्योरी तो आप यूट्यूब में देख लो, किताबें पढ़ लो लेकिन जब तक आप प्रेक्टिकल नहीं करोगे तब तक आपको पता नहीं चलेगा कि यह फसल कैसे होती है क्या इसमें बीमारी होती है कैसे इसकी रोकथाम करनी होती है, तो समस्याएँ तो आती हैं लेकिन उनसे भी सीखने को ही मिलता है| और इसके अलावा हमारे यहाँ मुख्य समस्या जंगली जानवरों जैसे सूअर और बंदरों का ज्यादा आतंक है जो फसलों को ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं।

हिन्दुस्तान

उत्तराखंड में पहली बार हो रही चिया सीड्स की खेती

हि हीरे

■ दीप पाठक

काशीपुर। इटली, अमेरिका की तर्ज पर उत्तराखंड में पहली बार ऋषिकेश के अनंत खरोला ने चिया सीड्स का उत्पादन शुरू किया है।

अनंत देहरादून, ऋषिकेश के सुपर मार्केट और डिपार्टमेंटल स्टोर्स के बाद अब इसे विदेश में भी ले जाने की तैयारी कर रहे हैं। इस बार अनंत ने 100 किसानों को जोड़कर दो हजार किलो चिया सीड्स उत्पादन का लक्ष्य रखा है। आईआईएम काशीपुर में भी अनंत का यह स्टार्टअप चयनित हुआ है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 25 लाख रुपये की फंडिंग के लिए भी स्टार्टअप का चयन किया गया है। ऋषिकेश निवासी अनंत खरोला ने वहीं के इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी से सिविल इंजीनियरिंग करने के बाद पहाड़ों में हो रहे पलायन को रोकने के लिये वह क्या कर सकते हैं, इस बारे में गंभीरता से सोचा। इस बीच अनंत की मुलाकात ऋषिकेश में ही इटली मूल के इलियास मार्टिन से हुई। उन्होंने चिया सीड्स की खेती के लिये प्रेरित किया। इस पर उन्होंने वर्ष 2017 में चिया सीड्स पर रिसर्च और ट्रायल शुरू किया। चिया उत्पादन के लिए जलवायु उपयुक्त पाये जाने पर उन्होंने वर्ष 2021 में 41 किसानों को जोड़कर डेढ़ हेक्टेयर में खेती शुरू की। सफल होने पर आईआई काशीपुर ने स्टार्टअप का चयन किया। अनंत खरोला ने बताया इस वर्ष 100 से अधिक किसानों को जोड़कर 2.50 हेक्टेयर से तीन हेक्टेयर में चिया सीड्स का दो हज किलो उत्पादन करने का लक्ष्य है।

अभी तक टिहरी गढ़वाल के पां गांव के 53 किसानों को जोड़ा जा चुका है। बताया कि वह किसानों से दो सौ रुपये किलो चिया खरीदते हैं और ब्रांडिंग और पैकेजिंग के बाद बल्क में 300 रुपये किलो बेचा जाता है, जो स्टोर में एक हजार रुप किलो बिकता है।

"आईआईएम काशीपुर में इस स्टार्टअप का चयन हुआ था। इसके बाद पिछले साल दो महीने की आईआईएम में ट्रेनिंग ली। यह स्टार्टअप कृषि विकास योजना में 25 लाख रुपये की फंडिंग के लिए भी चयनित हुआ है। इससे पहाड़ के अन्य किसानों को भी जोड़ा जाएगा।

–**अनंत खरोला**, ऋषिकेश निवासी एवं स्टार्टअप, आईआईएम, काशीपुर

किसानों को कर रहे प्रोत्साहित

अनंत चिया की खेती के लिये पर्वतीय किसानों को प्रेरित कर रहे हैं। बताया कि अभी चिया का प्रोडेक्शन बहुत कम हो रहा है। जबकि इसकी डिमांड ज्यादा है। चिया की खेती पर्वतीय किसानों के लिए आय का अच्छा स्रोत है। इससे पहाड़ से पलायन संबंधी समस्या का काफी हद तक समाधान किया जा सकता है। भविष्य में उनकी चिया से बिस्किट, जैम, ऑयल बनाने की भी योजना है।

पौष्टिकता से भरपूर है चिया सुपर फूड

अमर उजाला ब्यूरो

ऋषिकेश।

इटली के इलियास मार्टिन ने टिहरी जिले के गांव में की खेती

इसी वर्ष फरवरी 2017 में की सुपर फूड चिया खेती की शुरुआत

उत्तराखंड के टिहरी जिले के क्यार्की गांव में इटली मूल के निवासी इलियास मार्टिन ने विदेशी किस्म के सुपर फूड चिया की खेती का परीक्षण किया है। उन्होंने गांव में करीब छह नाली भूमि पर चिया की खेती का सफल परीक्षण किया है। इटली मूल के निवासी इलियास मार्टिन ने क्यार्की फाउंडेशन के बैनर तले तीर्थनगरी के समीपवर्ती गांव क्यार्की में इसी वर्ष फरवरी 2017 में सुपर फूड चिया की खेती की शुरुआत की थी। मार्टिन व उनके स्थानीय सहयोगियों की मेहनत रंग लाई। उन्होंने प्रयासों से गांव में करीब छह नाली भूमि पर चिया की खेती का सफल परीक्षण किया है।

मार्टिन ने बताया कि इटली में चिया की बुवाई जून में की जाती है, और नवंबर में यह फसल तैयार हो जाती है। चिया के बीज का इस्तेमाल कई तरह से खाने के रूप में किया जा सकता है। जैसे इसे उबालकर सलाद के रूप में, दलिया की तरह पकाकर व कच्चा बीज भी खाया जाता है। खास बात यह है कि चिया की खेती भारत में कहीं भी नहीं की जाती है। उन्होंने बताया कि यहां की जलवायु इसकी खेती के लिए अनुकूल नहीं है। लिहाजा चिया की खेती को लेकर लोग अभी जागरूक नहीं हैं।

क्यार्की गांव में चिया की खेती का उत्पादन करते हुए।

चिया की पौध को काटते उत्पादक।

वरदान साबित हो सकती है खेती

क्यार्की फाउंडेशन के जनसंपर्क अधिकारी अंकित रावल ने बताया कि यदि इस खेती के लिए लोग आगे आते हैं और सरकार का सहयोग मिलता है, तो भविष्य में उत्तराखंड के किसानों के लिए यह वरदान साबित हो सकता है। क्योंकि यह किसानों के लिए अच्छी आय का स्रोत बन सकता है। इससे कि पलायन को रोकने में भी मदद मिलेगी और सरकार को भी अच्छा राजस्व प्राप्त होगा।

टिहरी के जिला कृषि अधिकारी जय प्रकाश तिवाड़ी ने बताया कि उन्हें अभी तक चिया की खेती के बारे में कोई जानकारी नहीं है। जल्द ही साइट पर जाकर इसके बारे में विस्तृत जानकारी ली जाएगी और इस खेती को बढ़ावा देने के लिए आगे के बारे में सोचा जाएगा।

कि इलियास मार्टिन जब ऋषिकेश घूमने आए थे, तो उन्हें यहां की जलवायु चिया की खेती के अनुकूल लगी, लिहाजा उन्होंने तीर्थनगरी के समीपवर्ती क्यार्की गांव को इसकी खेती के लिए उपयुक्त पाया और गांव के लोगों की मदद से चिया की खेती का प्रयोग किया।

रावल ने बताया कि यह एक रिच फूड है, जोकि अपने गुणों के कारण लोगों में अपनी पहचान बना

चिया में हैं पौष्टिक तत्व

विदेश में चिया के पौधे की लंबाई आम तौर पर 3 से 4 फीट तक होती है, लेकिन क्यार्की गांव में उगाई गई चिया की फसल में पौधे की लंबाई लगभग 5-6 फीट तक देखी गई है। चिया सुपरफूड में कई विशेषताएं हैं। चिया में प्रचुर मात्रा में कई पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं, जिनमें ओमेगा-3, अमीनो एसिड, कैल्शियम व विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। ओमेगा-3 शाकहारी लोगों के लिए विशेषकर लाभदायक है क्योंकि इसमें मांसाहारी भोजन से तीन गुना अधिक प्रोटीन पाया जाता है। चिया के बीज में 100 ग्राम दूध से दो गुना ज्यादा कैल्शियम पाया जाता है।

कीमत लगभग 1500 से 2000 रुपये है। यह फूड अभी लोगों की

को बढ़ावा देने के लिए सरकार को प्रमोट करना चाहिए। ऐसा हुआ तो

‘चिया’ खेती का निरीक्षण करने पहुंचे कृषि अधिकारी

खेती को बताया पौष्टिक और लाभकारी, सरकार की ओर से खेती के लिए 75 प्रतिशत अनुदान की बात कही

चिया की खेती को बढ़ावा

अमर उजाला ब्यूरो

ऋषिकेश।

क्यार्की फाउंडेशन के चिया सुपरफूड की खेती के सफल प्रयोग के बाद कृषि महकमा उत्तराखंड में चिया की खेती को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय हो गया है। साथ ही महकमे ने फाउंडेशन को जिम्मेदारी देते हुए इसमें कुछ स्थानीय बीजों को मिलाकर नरेंद्रनगर ब्लॉक को सुपरफूड क्लस्टर बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। जिसकी जिम्मेदारी फाउंडेशन को सौंपी गई है।

फाउंडेशन के इंजीनियर चिया सुपरफूड की खेती के साथ ही कई स्थानीय बीजों के क्लस्टर को लेकर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों को जागरुक करेंगे, इसके बाद यह ब्लॉक संभवतः देश का पहला क्षेत्र होगा जहां विदेशी पैदावार की खेती होगी। भारत में विदेशी खेती को करने के लिए फाउंडेशन ने इसके लिए पहले ब्लॉक के पांच गांवों और लगभग दो सौ किसानों को शामिल किया है। संस्था नरेंद्रनगर प्रखंड में प्रथम चरण में क्यार्की, कखूर, नीर, कुई और डांगू गांव को चिया सुपरफूड की खेती के लिए विकसित करेगा। बताया गया कि सुपरफूड

नरेंद्रनगर ब्लॉक को सुपरफूड क्लस्टर बनाने की तैयारी

ग्रामीणों को प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम सेअत्याधुनिक कृषि उपकरणों, बीजों, जैविक खादों, सिंचाई के साधनों, फसलों की पृथक्कीकरण और फसलों को जैविक तरीके से उगाने के गुर सिखाए जाएंगे। साथ ही सुपरफूड क्लस्टर के अंतर्गत उन्हें चिया सीड्स, सूरजमुखी के बीज, किनोवा, कद्दू के बीज, तिल, हेंप के बीज, अलसी आदि बीजों की पैदावार का प्रशिक्षण दिया जाएगा। यदि उपयुक्त बीजों का परीक्षण सफल हुआ व क्षेत्र में फसलों की पैदावार बढ़ी तो है, इससे किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होने से क्षेत्र से रोजगार के लिए पलायन में काफी हद तक मददगार साबित हो सकता है।

बीते दिनों कृषि विभाग की ओर से आयोजित की गई बैठक में क्यार्की फाउंडेशन के संस्थापक इंजीनियर अनंत खरोला, फाउंडेशन के साथ क्षेत्र में चिया की खेती का सफल प्रयोग करने वाले ईलियास मारितन व टिहरी के जिला कृषि अधिकारी जयपाल तिवारी शामिल हुए। बैठक

क्यार्की फाउंडेशन द्वारा आयोजित कृषिक बैठक

ऋषिकेश (ब्यूरो)। क्यार्की फाउंडेशन द्वारा आयोजित कृषक चोपाल का आयोजन किया गया जिसमे नरेन्द्र नगर ब्लाक के कृषि अधिकारी मनोज चौहान, क्यार्की गाँव की प्रधान उषा रावत और क्यार्की फाउंडेशन के संयोजक शामिल हुए। इस दौरान फाउंडेशन के अध्यक्ष अनंत खरोला ने अपने फाउंडेशन के द्वारा किये जाने वाले काम के बारे मे कसलकारो को बताया जिसमे पलायन को रोकने के तरीको, कृषि से जुडी सरकारी योजनाये और एको टूरिज्म के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा देने की बात कही। किसानों ने बैठक मे बढ़चढ़ के हिस्सा लिया और हामी भरते हुए क्यार्की फाउंडेशन से जुड़ने का फैसला लिया। दो गंटे की मीटिंग के दौरान बताया गया की किस तरह चिया सुपर फूड और अन्य सुपर फूड बीजो को उगने से किसानो को दुगने से भी ज्यदा का लाभ पहोचाया जा सकता है। साथ ही साथ परम्परागत खेती को बेहतर बनाने के लिए फूड प्रोसेसिंग की तकनीको का भी इस्तेमाल किया जाएगा।

पलायन रोकने व स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए सुपरफूड क्लस्टर के तौर पर विकसित की बात कही। जिसके लिए वर्ष 2018 में चिह्नित गांवों को सुपरफूड

bhu कृपा

We Farm, We Serve

INTRODUCTION

“Nestled in the Himalayan Mountains, Bhukripa is a harmony of nature and culinary artistry. Founded by two nature enthusiasts, this company thrives on sustainability, tradition, and a commitment to the community. Explore the unique blend of age-old flavors and modern innovation that sets Bhukripa apart. From mushrooms cultivated in tune with nature to homemade taste pickles rooted in Himalayan traditions, Bhukripa brings you the essence of the mountains. And don't miss the golden drops of Himalayan honey. Experience Bhukripa – a taste of nature, a commitment to tradition, and a promise of sustainability.”

इंजीनियरिंग छोड़ स्वरोजगार अपनाया

देहरादून के युवा उद्यमियों ने युवा बेरोजगारों को दिखाई राह

OUR JOURNEY

From growing mushroom →

To processing the food items →

OUR GOALS

- Connect local farmers to available market.
- To create internship program for college students.
- Empowering women

OUR PRODUCTS

FRESH BUTTON AND OYSTER MUSHROOM

DRY AND POWDER OYSTER MUSHROOM

PICKLES

- MANGO
- GARLIC
- LEMON
- LINGURA
- TIMLA
- MUSHROOM
- MIX

HONEY

चार अचार

MUSHROOM BY PRODUCTS

PICKELS

SPICES

HONEY

OUR TEAM

CONTACT US :

ADDRESS :

Bhukripa Foods, East Hopetown, Umedpur, Premnagar, Dehradun (248007), Uttarakhand

Email us at: bhukripa10819@gmail.com
Visit us at: bhukripa.com

Consumer care: 9756463946
9119086042

bhukripafarm

bhukripafarms

The Pahadi Agriculture e-Magazine

Mob.: 9412383468

Website: www.pahadiagromagazine.in

THE PAHADI AGRICULTURE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

"THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE"

पर्वतीय कृषि की मासिक ई – पत्रिका

OUR PUBLISHED ISSUES:

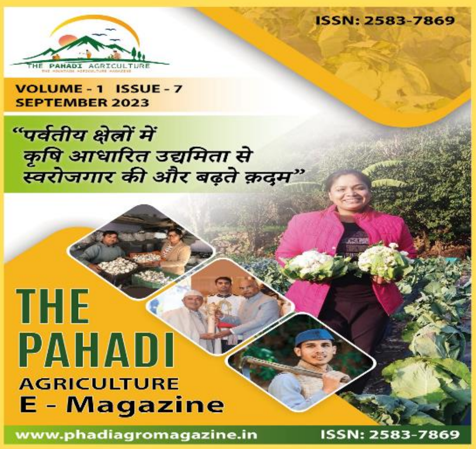

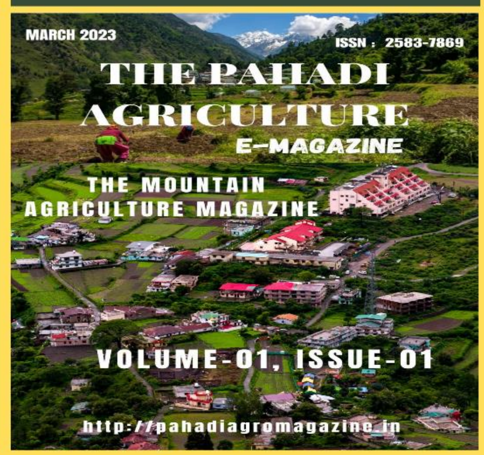

RECOGNITIONS & MEMBERSHIPS

- Member of **AJAI**- Agriculture Journalists Association of India
- Member of **NNAJ** - National Network of Agri Journalists
- **ISSN :** 2583 - 7869
- **RNI :** Title verification: UTTMUL00067
- **MSME:** UDYAM-UK-05-0043667
- Recognized by **Sri Dev Suman University**, Uttarakhand, **GBPUAT, Pantnagar**, **VCSG UUHF, Bharsar, State agriculture Dept.**, **Rural development** and **Migration Commission Uttarakhand**

OUR INITIATIVES:

- **Pahadi Krishi Samwad:** To provide Media Coverage to farmers/ startups, and organizing ***Hill Agri Dialogue Series on Mountain Agri***.
- **Pahadi Kisan:** Awareness series on mountain Agriculture

Follow us on:

SCAN & READ

“द पहाड़ी एग्रिकल्चर”

ई-पत्रिका

‘पर्वतीय कृषि की ऑनलाइन मासिक पत्रिका’

संपर्क सूत्र:

+91 9412383468

pahadiagriculture@gmail.com

https://pahadiagromagazine.in